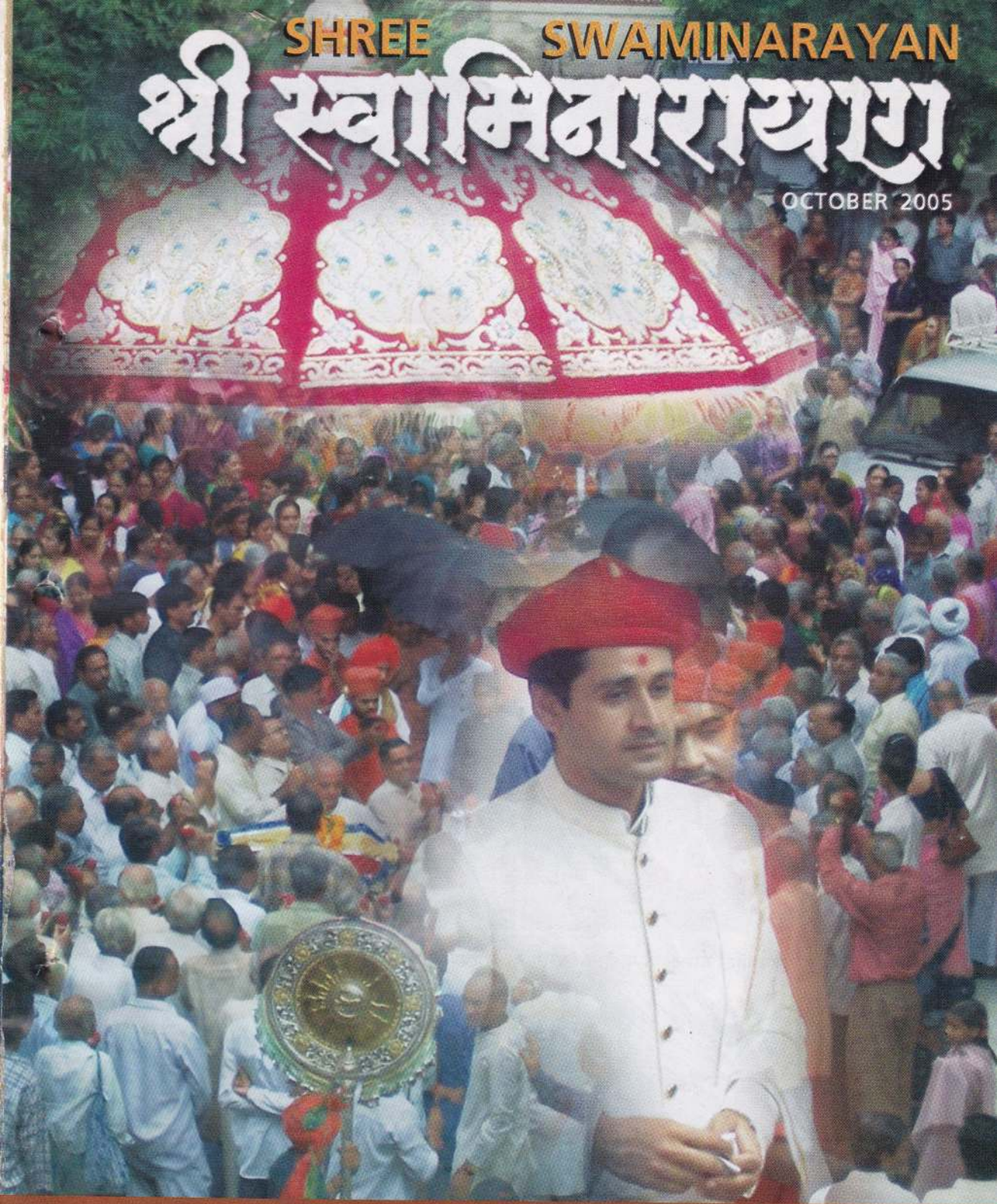
SHREE SWAMINARAYAN
શ્રી સ્વામિનારાયણ

OCTOBER 2005



પ્રકાશકઃ- શ્રી સ્વામિનારાયણ મંદિર, અમદાવાદ-૧ Publisher:- Shree Swaminarayan Temple, Ahmedabad-1



लोनीया (I.S.S.O.) श्री स्वामिनारायण मंदिर में दर्शन
ते हुए श्री नरनारायणदेव, श्री घनश्याम महाराज तथा श्री
धाकृष्णदेव ।



कोलोनिया में कथाकार
श्री योगेन्द्रभट्ट
कथामृतपान कराते हुए ।



कोलोनिया (I.S.S.O.) मंदिर मूर्ति
प्रतिष्ठा प्रसंग पर शोभायात्रा में युवा
हरिभक्त ।



कोलोनिया के राजमार्गो पर मूर्ति प्रतिष्ठा महोत्सव की शोभायात्रा में ठाकुरजी के साथ प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा विशाल संख्या में हरिभक्त ।



श्री स्वामिनारायण मंदिर बोल्टन में पाटोत्सव प्रसंग पर पारायण कथा का रसपान करते हुए श्रोता ।





ओकलेन्ड न्युझीलेन्ड
में पू. आचार्य
महाराजश्री के दिव्य
संकल्प को साकार
करता हुआ श्री
स्वामिनारायण मंदिर
(I.S.S.O.) अब
पूर्ण होने की तैयारी में
है और निकट भविष्य
में प्रतिष्ठा महोत्सव
का आयोजन होगा ।

श्री नरनारायणदेव पीठ स्थान का मुखपत्र

SHREE SWAMINARAYAN

श्री स्वामिनारायण

वर्ष - ४ अक्टूबर -२००५



संस्थापक
श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री १००८ श्री
तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री

श्री स्वामिनारायण म्यूजियम
नारायणपुरा, अहमदाबाद.
फोन : २७४१९५९७ - ९८२५३०९५९७
फेक्स : २७४१९५९७

दूर ध्वनि
२२१३३८३५ (मंदिर)
२७४७८०७० (स्वा. बाग)
फेक्स ०७९-२७४५२१४५

तंत्रीश्री
शास्त्री स्वामी निर्गुणदासजी
(महंत स्वामी)

पत्रिका (मासिक अंक) मूल्य
प्रति वर्ष ५०-००
वंशपारंपरिक
देशमें ५०१-००
विदेश ५०००-००
प्रति कोपी ५-००

प्रकाशन समय
प्रति माह (मास) की दिनांक ११ को
गुजराती, हिन्दी एवं अंग्रेजी भाषामें

पत्र व्यवहार
श्री स्वामिनारायण मासिक कार्यालय
श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर,
अहमदाबाद-३८०.००१.

हिन्दी अनुवादक
डॉ. वाचस्पति मिश्र (प्रधान पंडित)
श्री स्वामिनारायण मंदिर, अहमदाबाद

पत्तेमे परिवर्तन के लीये
E-mail : manishnvora@yahoo.co.in

अ नु क्र म णि का

१.	अस्मदीयम	२
२.	प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीके शुभ कार्यक्रमोकी रुपरेखा	३
३.	श्री नरनारायणदेव महिमा	५
४.	पूर्वाचार्य महाराजश्री का रचनात्मक अभिगम	५
५.	महाकवि भक्त देदल	६
६.	अज्ञानपाश करुणा करके काट दो	८
७.	एक अमेरिकन के जीवन का परिवर्तन	१०
८.	शरदपूर्णिमा - शरदोत्सव	१२
९.	सद्‌गुरु श्री महानुभावानंद स्वामी	१३
१०.	सत्संग समाचार ((१) वर्षोवर्ष का हिसाब (२) सुरक्षित रहने की उपाय	१७
११.	प्रश्नपेटी	१९
१२.	समाचार वृत्तांत	२०

प्रकाशक
श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर, अहमदाबाद-१
दूर ध्वनि : २२१३२९७०, २२१३६८१८. फेक्स : २२१७६९९२.
श्री नरनारायणदेव युवक मंडल कार्यालय : २२१६६७६७
Visit us : www.swaminarayan.info
E-mail : sntemple@hotmail.com
www.swaminarayanmuseum.com / org

अस्मदीयम्

तन्त्रीश्री की तरफ से.....

परमेश्वर की कृपा का कोई पार नहीं है । इस जीव की इच्छाओं का भी अंत नहीं है । ईश्वर जब देता है खूब देता है, जिससे जीव घबडा जाता है । जब नहीं देता तब दु:खी हो जाता है । वरसात के लिए वारंवार प्रार्थना तथा धुनि करने से इस वर्ष भगवान प्रसन्न होकर खूब वरसात किये, परिणाम स्वस्य सभी लोग त्राहिमाम् बोल गये । थोडा अधिक वरसात हो तो भी परेशानी न हो तो भी परेशानी यही तो जीव का स्वभाव है । फिर भी वर्षाऋतु आकर नया जीवन सभी को प्रदान करती है । किसान हो या सामान्य जनता हो सभी को खुशियां प्रदान करती है । वहीं से जीवन का नया वर्ष प्रारम्भ होता है । सबकुछ भुलाकर जो कुछ प्राप्त होता है उसमें आनंद का पर्व मुख्य है । जो कुछ मिला है, जो मिलने वाला है और जो कुछ है वह सभी को भूलजाना है । श्रीजी महाराज के सिद्धान्तानुसार जगत के सभी व्यवहार भूलने के लिए है इसी में आनंद है । यदि संसार को याद रखिये तो बन्धन मिलेगा और बन्धन ही जन्म मृत्यु का कारण है । धन, सम्पत्ति, पुत्र, कलत्र, मान-सन्मान, यश, कीर्ति, सत्ता इन सभी को भूल जाने में ही अपना हित है । स्वयं महाराजने भी श्री नरनारायणदेव की प्रतिष्ठा के बाद कुछ मैने नहीं किया है, इस को भूलने के लिए गणेश धोलका के रायणों में एक महीने तक स्के रहे । स्वयं परमात्मा हैं फिर भी अपने जैसे जीव को उपदेश देने के लिए ऐसा चरित्र किये थे । शुभ कार्य करो या देह सम्बन्धी कार्य करो इन दोनो को भूल जाने में ही हित है । यदि भूलें नही और अंत में याद आजाय तो जन्म मरण का कारण बने । वासना रहजाय तो वासनिक जीव के जन्म के सिवाय कोई गति नहीं है । इसलिए सावधान होकर जीवन में जो कुछ स्वयं से शुभाशुभ कर्म हो गया हो उसे भूलाकर एकमात्र परमेश्वर के स्वस्य को अपने मानस पटल परस्थिर करके स्मृति में रखना भगवान के भक्तों के लिये हितकारी है । इसीलिए लोक व्यवहार में प्रस्थापित हुआ है कि प्रतिदिन यदि जागतिक व्यवहार को नहीं भूल सकें तो वर्ष में एकदिन भूलने का अवश्य पसन्द करना चाहिए, जिससे वहीं से जीवन जीने की रीति प्रारंभ हो सके ।

तंत्रीश्री (महंत स्वामी)

– *शास्त्री स्वामी निर्गुणदासजी का*

जयश्री स्वामिनारायण



प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के शुभ कार्यक्रमों की रुपरेखा

सितम्बर - २००५

१५. प.भ. राजुभाई बलदेवभाई पटेल (डांगरवावाला) के यहाँ पदार्पण, थलतेज ।

१६. प.भ. चन्द्रकांतभाई वल्लभभाई मिस्त्री के यहाँ पदार्पण, कालुपुर ।

१७. प.भ. श्रेयसभाई कांतिभाई महेता (एडवोकेट) के यहाँ पदार्पण, मोडासा ।

१८. श्री स्वामिनारायण मंदिर बोपल में सत्संग सभा प्रसंग पर पदार्पण ।

१९. श्री नरनारायणदेव युवक मंडल बापुनगर द्वारा आयोजित "युवा शिबिर" अपनी अध्यक्षता में सम्पन्न किया। श्री स्वामिनारायण मंदिर एप्रोच ।

श्री नरनारायणदेव युवक मंडल सेटेलाईट - वस्त्रापुर द्वारा आयोजित सत्संग सभा अपने शुभ सानिध्य में सम्पन्न किये, सप्तपदी होल, जोधपुर चार रस्ता ।

प.भ. जयंतीभाई के पोरिया के यहाँ पदार्पण, सेटेलाईट ।

२६. प.भ. नारायणभाई मोतीभाई पटेल के यहाँ पदार्पण, घोडासर ।

श्लोक १४७ के अनुसार शिक्षापत्री की आज्ञा अनुसार दशवां या वीसवां भाग धर्मादा सभी लोग महाराजश्री की आज्ञानुसार करें ।

सम्वत् २०६१ आश्विन शुक्ल-१५ ता. १७-१०-२००५ को चन्द्रग्रहण दिखाई नहीं देगा इसलिए नीयम पालने की आवश्यकता नहीं ।

श्री नरनारायणदेव महिमा

- साधु अचलप्रकादास गुरु पूर्णप्रकाशदास

इस भरत खण्ड के अधिपति श्री नरनारायण देव है । श्री नरनारायण देव कितने कृपालु है - स्वयं बैर के नीचे तप करते है और भक्तो को फल देते है । हम किसी प्रकार का कोई तप नहीं करते फिरभी प्रभु नरनारायण देव के तप के प्रताप से कितना सुखी रहते है हमें एक दिन का व्रत करना होता है तो कितने ढीले पड जाते है; लेकिन श्री नरनारायण देव की कृपा तो देखिए तप स्वयं करते है ओर फल भक्तो कों देते है । हमें तीन घंटे एक आसन पर बैठना होतो बैठा नही जाता है; जबकि भक्तो के लिए श्री नरनारायण देव वर्षो से एक ही आसन पर बैठकर तप कर रहे हैं ।

मुक्तानंद स्वामी ने गाया है कि-

बहालो भरत खंड ना नर नार ने पोते तप करीने आपे फल सोय,
बद्रिपती प्रबल प्रताप छे ।
हरीना तप केरा पुण्य प्रताप थी;
थया शुद्ध मन रे हरिजन सर्व कोय,
बद्रिपति प्रबल प्रताप छे ।

जैसे दूधपीने वाला बालक बिमार होता है और मातादवा खाती, बालक ठीक हो जाता है वैसे ही बद्रिकाश्रम मे श्री नरनारायण देव तप करते है और फल मुमुक्षुजनोको देते है । उस तप का फल हम प्रत्यक्ष देखते हैं । इस कराल कलिकाल में व्यसन, फैसन तथा माया के प्रचन्ड झंझावातमें भी भगवान के भक्त सतयुग जैसा जीवन जीते हैं और वैसा अन्य से भी करवाते हैं । कलियुग का एक भी दोष सत्संगी को आने नहीं पाता है । यह सब श्री नरनारायण देव का प्रताप हैं । उन्हीं की शरण मां होने से भक्तजन आज भी पंच विषय में फंसते नहीं हैं । भक्तजन इस पर विचार करें कि श्री नरनारायण देव को तप करने की क्या जरुरत है । कोई मनुष्य तो अपनी इन्द्रियों को वश में रखने के लिये तप करते हैं । या भगवान को प्रसन्न करने के लिए तप करते हैं । लेकिन जिनकी सभी वृत्तियाँ अपने आप वश में है तथा जो स्वयं पुरुषोत्तम भगवान हैं । फिर भी तप करने की उन्हें क्या जरुरत हैं । बालक कडवी दवा नहीं खापाता है । उसे थूक देता है । तो उसके बदले में उसकी मां दवा खाती है । जिस दवा का तत्व दूध में आता है; जब बालक माता का दूध पीता है तो निरोगी हो जाा हैं । हम सभी की मां की भी मां यदि कोई है तो वे नरनारायण देव हैं । अगस्त ऋषि ने "अथर्वण शोषणी" नाम की परमेश्वरी विद्या सिद्ध की थी । मंत्र के तथा देव के बल से अगस्त ने समुद्र को शोष लिया था । एकबार अगस्त ऋषि देवी से कहे कि आप ने मेरा शुभ कार्य किया है इसलिए आपका नाम माहित्या पडेगा । इस क्षेत्र में आप की ऊत्तम प्रजा होगी । भक्ति पूर्वक आपकी पूजा करने वाला हमेंशा वृद्धि को प्राप्त करेगा । स्कन्द पुराण में कहा गया है कि इस क्षेत्र मे नर द्वारा स्थापित नरादित्य हैं । रविवार तथा षष्ठी के दिन उनका दर्शन करने से मनुष्य पाप मुक्त होता है । वह अर्जुन की तरह पराभव को नहीं प्राप्त होता हैं । दर्शनार्थी रोग मुक्त हो जाते हैं । दरीद्र को धन मिलता है । एकबार तीर्थ यात्रा के लिए निकले हुए पांडुपुत्र अर्जुन हाटकेश्वर क्षेत्र में आगये अन्य क्षेत्रो से पावन क्षेत्र देखकर अर्जुन ने वहा पर मनोहर प्रासाद में आदित्य की स्थापना की तथा उसी में नरनारायण देव को प्रतिष्ठित किया । कार्तिक शुक्ल द्वादशी के दिन अघमर्षण मंत्र से तेजस्वी मूर्ति श्री नरनारायण देव का पूजन करने से परमगति प्राप्ति होती है। हजारों वर्षो से श्री नरनारायण देव मुमुक्षुओं के तथा मुक्तो के आराध्य देव बने हुए हैं ।

श्री स्वामिनारायण भगवान ने भी अहमदावाद तथा भुज मे श्री नरनारायण देव की प्रतिष्ठा किया । प्रतिष्ठित कर के कहा कि श्री नरनारायण देव का जो दर्शन करेगा उसे बद्रिकाश्रम के दर्शन का फल मिलेगा जो प्रति दिन करेगा उसे मोक्ष मिलेगा । जो इस मंदिर में जप करेगा तप करेगा, पूजा करेगा, पाठ करेगा, पाटोत्सव करायेगा उसे अक्षय फल की प्राप्ति होगी । उस के सभी मनोरथ पूर्ण होंगे । स्वर्ग में से देवता

अनुसंधान पृष्ठ नंबर ११

पूर्वाचार्य महाराजश्री का रचनात्मक अभिगम

- प्रो. सूर्यकांत भट्ट (भुज)

श्रीजी महाराज के अपर स्वरूप प.पू.ध.धु. आचार्य महाराज श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के जीवन की तरफ जो व्यक्ति देखे उसे अवश्य प्रेरणा मिलेगी, बल मिलेगा, शास्वत शांति मिलेगी । अपने संप्रदाय के श्रृंगार समान "श्री स्वामिनारायण मासिक अंक" के प्रत्येक अंको की तरफ दृष्टिपात करें तो उसमें पूज्य आचार्य महाराजश्री की विगत मास के कार्यक्रम की रूपरेखा होती है । समग्र मास में भाग्य से ही २-४ दिन की पधरामणी न हो अन्यथा चालू ही चालू रहती है - वह देश में हो या विदेश में हो, देश में यदि हो तो भुज-कच्छ और दूर स्थल पर भी हो सकती है । अपनी ही कार में लम्बी मुसाफरी करिये तो ही स्वयं ख्याल आये विना नहीं रहता । परिणाम स्वरूप महाराजश्री का भोजन कभी एक समान सम्भव नहीं हो पाता है । फिर भी आरोग्य जीवन जीने के अपनी एक शैली है जिससे उन के मुखारविंद पर सदैव स्मित बना ही रहता है । इतना ही नहीं महाराजश्री चाहे कितने ही क्योंन थके हों तो भी आगुंतुकों की सलाह लेते है और यथायोग्य सलाह देते भी हैं ।

स्वक्षमता होते हुए भी अपने उत्तराधिकारी को धर्मधुरा सुपूर्द कर दिये । संप्रदाय में ही नहीं सम्प्रदाय से अलग तथा देश विदेश में भी आप के इस त्याग की जयजयकार हुई । इस समय निवृत्ति के समय में प्रवृत्ति शील पूर्वाचार्य महाराजश्री का दर्शन अपने जीवन का एक बहुमूल्य लक्ष्य होना चाहिए । श्रीजी महाराजश्री के प्रसादी की वस्तुओं का एक शोभायमान संग्रहस्थान म्युझियम का साकार स्वरूप देने के लिए निशदिन महाराजश्री कार्यरत हैं । यह म्युझियम विशेष सर्जन शक्ति, विशेष स्मरण शक्ति, वेशेष आध्यात्मिक शक्ति तथा विशेष आयोजन शक्ति की अपेक्षा रखता है ।

मात्र अल्प समय में ही श्रीजी महाराज का यह अमूल्य धरोहर प.पू. श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री समग्र जगत के सामने प्रस्तुत करने वाले हैं । उस समय म्युझियम के अकल्पनीय वस्तुओ का दर्शन करते हुए लोग मनःचक्षु से श्रीजी महाराज का दर्शन करने का लाभ ले सकेंगे । मुमुक्षुओं को नयी प्रेरणा मिलेगी । इस म्युझियम को देखकर लेखकों, कवियों तथा चिंतको के चित्त में एक नयी प्रेरणा-मिलेगी । दूसरी तरफ इस प्रकार अनेक क्षेत्रों में अविरत प्रयत्नो के परिणाम से सत्संग तथा सत्सगियो में वृद्धि अवश्य होगी । सत्संग की व्यापकता विश्वभर में फैलेगी तथा परम पूज्य पूर्वाचार्य महाराजश्री का यह अथक परीश्रम, अविरत परीश्रम सफलता की चोटी पर पहुंच जायेगा । इस में लेशमात्र का संदेह नहीं है ।

पूज्य महाराजश्री को तो श्रीजी की प्रत्यक्ष प्रेरणा है । आप के चरणो में म्युझियम के लिए आने वाली प्रसादी की भेंट स्वयं उसकी असलीयत की छानवीन करते रहें हैं । ऐसी लाक्षणिक दिव्य दृष्टि पूज्य महाराजश्री को श्रीहरि ने स्वयं दिया है । वंश परंपरागत प्राप्त प्रसादी की वस्तुओं को भी स्वयं विश्व कल्याणाय म्युझियम में भेट दे रहे हैं । यही तो महाराजश्री का महान त्याग है ।

सर्वावतारी श्री स्वामिनारायण भगवान के प्रसादी की वस्तुएं यावच्चंद्र दिवाकरौ तक कैसे सुरक्षित रखी जाय इसके लिए महाराजश्री के मार्ग दर्शन में महालय तैयार होने आ गया है । किस स्थान पर कौन सी प्रसादीकी वस्तु उचित होगी, किस प्रकार की वस्तुका क्या नाम रखा जाय लोग कैसे शांति से इन वस्तुओं का दर्शन कर सकें, उन सभी को ध्यान में रखकर महाराजश्री व्यवस्था में लगे हैं । ऐसे अलौकिक कार्य में तन, मन, धन से अपना सहयोग हो यह हमारी कर्तव्य निष्ठा है । परंपरागत यदि अपने पास वस्तुए हैं तो - अवश्य महाराजश्री के चरणों में अर्पित करके अपने जीवन को कृतार्थ करनें का अवशर न रहजाय यह सभी को ध्यन रखना चाहिए ।

महाकवि भक्त देदल

- प्रो. महादेव धोरीयाणी (राजकोट)

गाम दामथी नहि गण्यो,
देदल तोणो दल ।
कंठी कारण कोपियो,
गजा वे रणमल ॥
हरिकारण हदपार हुए,
कंठी तोडण कज्ज ।
सपने सहजानंद कहे,
भूप ग्रही ले लज्ज ॥
प्रभाते कवि प्रेम थी,
देदल भक्त दहींवाण ॥
सुमर्यो सहजानंद शरण,
भूप मोड कण भाण ॥
सहजानंद नी सानथी,
रिज्यो फरी रणमाल ।
देदल भक्त ने मान दई,
पास रख्यो प्रतिपाल ॥

मोरवी के रवाजी ठाकोर के समय की यह हृदय स्पर्शी घटना है । रवाजी ठाकोर का रंग वेरंगी दरबार अमीर उमराव तथा भयातों से भरा हुआ था । देदल भक्त रवाजी ठाकोर के राजकवि थे । आज भक्तराज स्वामिनारायण का तिलक चंदन करके दरबार में आये । आते देखकर उन पर दृष्टि रवाजी ठाकुर की पड़ी और हंसते हुए कविराज से पूछे :-

कविराज ! ऐसा आज तिलकचंदन कहां से करके आ गये ? गढवी ! आप कौन सा धर्म पालते हैं । अपनी पगडी कहा धोने को दे आये हैं ? क्यों आज माथा खाली हैं ? रवाजी के इन प्रश्नों के व्यंग का भाव झलक रहा था ।

महाशय ! क्यों आज भरे दरबार में इतने प्रश्न पूछ रहे हैं ? मैं स्वामिनारायण धर्म पालता हूं । यदि आप भी इस धर्म का नियम देखें तो आप भी इसे स्वीकार किये बिना रहेंगे नहीं । यह धर्म यथार्थतः बड़ा धर्म है । कविराज बडे गौरवान्वित बोल रहे थे ।

कविराज ! आप तो चारणपुत्र अर्थात् देवीपुत्र कहे जाते हो, आद्य शक्ति के उपासक कहेजाते हो । आपको यह तिलकचंदन करने के लिए किसने कहा । इस तिलक चंदन को मिटा डालिए । कंठी को तोडडालिए । ठाकोर ? यह देह भले हि खत्म हो जाय लेकिन देदल इस धर्मका परित्याग नहीं करेगा ।

दरबारी सभी बडे आश्चर्य में पड गये । देदल की देदीप्यमान कांपती शरीर देखते ही रह गये । देदल की दलील भरी आवाज सुनकर रवाजी ठाकोर के सामने खडे हो गये । कविराज ! मेरा कहना मानो उसके बदले में मैं गाँव, नगर जो कहो विना संकोच के दे सकता हूँ । देवीपुत्र की मानो परीक्षा लेते हुए रवाजी ठाकुर ने कहा ।

ठाकोर ! मैं अपने धर्म का त्याग करके राज के लालच में पडूं तो मेरा कुल कलंकित हो ।

देदल भगत ! मैने वीर उपासक मानकर "राजकवि के रूप में आश्रय दिया था ।"

महाशय ! मैं और मेरा धर्म दोनो अलग हैं । आप को अपने कानफूंकने वालों से हमारे धर्म में हस्तक्षेप नहीं करना चाहिए । किसी की धार्मिक भावना को दबाना महापाप है । आपको देदल भगत से धर्म छोडने की बात नहीं करनी चाहए । मैं राज्य की कोई भी समस्या को स्वीकारने को तैयार हूं, लेकिन स्वमिनारायण धर्म का त्याग करने को तैयार नहीं हूँ । इतना कहकर क्रोध से कांपते हुए देदल भगत दरबार में से खड़े हो गये ।

कविराज ! जाते हुए मेरा आदेश भी सुनते जाओ ! मेरे आदेश का तिरस्कार करने वाला कोई अन्य होता तो उसकी आज कथाशेष हो गयी होती । लेकिन में लाचार हूँ कि आप देवीपुत्र हो मेरे देशका अनादर करना हो तो सूर्योदय होने से पहेल मोरवी त्याग देना । रवाजी ठाकोर का यह शब्द सुनकर देदल बडे आश्चर्य में पड गये ।

वाह ! मेरे प्यारे प्रभु ! आपकी जैसी इच्छा, आपकी इच्छा के विना एक तृण भी नहीं हिलता है । आपकी बड़ी अजब की लीला है । इसमें भी कोई श्रीजी का संकेत होगा । ऐसा कहते कहते देदल का गला भर गया । दरबार में अमीर उमराव की

आँखे भर आयीं ।

दोनों हाथों से सम्पूर्ण दरबार को प्रणाम करके, देदल भगत घर आकर श्रीजी महाराज की भाववाही मनोरम्य मूर्ति के सामने मस्तक झुकाकर, हाथ जोडकर कविराज कविता बोलने लगे ।

केते नद नदी तारे,
भरे हे समुद्र बारे ।
हंसने को हेत एख,
मान सरवरे से ॥
वन उपवन केते,
गीनते न आवे पार,
कामना को काज एक,
कल्पतरु वरसे ॥
वर्षाऋतु शरदकाल,
भरे नीर जल्द उज्वल ।
चातक को न्याल एक,
स्वांत बुंद जल से ॥
अर्ज की तो गर्जकोउ,
जाने लगार लोक ।
गरीब की अर्जी एक,
गरीब परवर से ॥

शीघ्र कवि देदल रचित "कच्छी काफी" यहाँ उल्लेखनीय है । मदद करीने महाराज, हणे असांजी मदत करो । कंठी असांगी बाधी तो कारण,
रुठो खवाजी राज गोपीनाथजी ॥
अधम ओधारण पतीत पावन,
बांथ ग्रहेजी लाज - गोपीनाथ ॥
पारस परसे लोहरी ये तो,
लोंहजी वेंदो लाज गोपीनाथ ॥
देंदल दुःख दूर कर्याते
मोडरीझयो महाराज - गोपीनाथ

देदल भगत उपरोक्त वीती कथा घनश्याम प्रभु को रोते हृदय से सुना रहे हैं । कहा जाता है कि - उसी रात्रि में ठाकोर मोणजी को घनश्याम महाराज ने दर्शन देकर कहा कि -

मोणजी ठाकोर मेरे देदल भगत विचारवाले मनुष्य हैं । पारिवारिक जीवन हैं - इनके परिवार का भरण पोषण राजकवि होने से मोरबी के राज्य तरफ से होता था । परंतु एकाएक ठाकोर खवाजी के आदेश से हरिभक्त देदल का होश हवाश उड गया है । इसलिए मेरे अनन्य भक्त देदल को अपने राज्य में बुलाने के लिए अपनी बैलगाडी भेंज दो ।

ठाकोर मोणजी रात्रि में ही बैल गाडी तैयार करके मोरबी भेंज दिया । सूरज निकलने से पहले चार बैलगाडी देदल भगत के दरबाजे पर आकर खड़ी हो गयी ।

चलो देदल भगत ! अपनी सामान गाडी में भरलो । श्रीजी महाराज की ऐसी कृपा देखकर देदल भगत गदगद हो गये । सामान लेकर वहाँ से चल दिये । माणिया पहुंचने पर ठाकोरने राजकविका भावपूर्ण स्वागत किया । गाजे बाजे के साथ स्वागत करके देदल भगत को सुन्दर रहने की व्यवस्था कर दिया ।

भरे दरबार में मोणजी ठाकोर ने देदल भगत का सत्कार करके राजकवि के रूप में नियुक्ति कर दी ।

सहजानंद स्वामी के इस चमत्कारिक ऐश्वर्य से ठाकुर खवाजी को भगवान स्वामिनारायण की महिमा समझ में आ गयी । दूसरे दिन ही मोरबी का ठाकोर माणिया के ठाकोर का मेहमान बन गया और देदल भगत की माफी मांगी । बाद में क्षमा मांगकर तथा मनाकर देदल भगत को खवाजी दरबार अपने साथ मोरबी ले आये और पुनः राजकवि का स्थान देकर सम्मानित करके रखे ।

अहमदाबाद श्री स्वामिनारायण मंदिर में दीपावली का शुभकार्यक्रम

धनतेरस : (आस्विनवद-१३) ता. ३०-१०-२००५ रविवार

काली चौदस : आश्विन वद-१४) ता. ३१-१०-२००५ सोमवार । श्री हनुमानजी का पूजन-आरती, सायंकाल ६-४५ बजे प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के शुभकर कमलों से सम्पन्न होगा ।

दीपावली : (आश्विन वद-१४) ता. १-११-२००५ मंगलवार समूह खाता वही पूजन शारदापूजन, लक्ष्मीपूजन, सायंकाल ६ बजे अहमदाबाद मंदिर के सभा मंडप में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के शुभकर कमलों द्वारा विद्वान विप्रो द्वारा कराया जायेगा ।

आश्विन वद-३०/१ संवत २०६२ नूतन वर्षाभिनंदन ता. २-११-२००५ बुधवार, गोवर्धन पूजा प्रातः ९ बजे, अन्नकूट आरती दोपहर १२ बजे, अन्नकूट दर्शन १२-०० से ४-०० बजे तके ।

- कोठारी स्वामी

अज्ञानपाश करुणा करके काट दो

- अतुलभाई भानुप्रसाद पोथीवाला (अमदावाद)

दीपावली का समय नजदीक आता जा रहा है । प्रकाश के पर्व का स्वागत करने के लिए मन सभी का उत्साहित रहता है । शरदऋतु में आनेवाला दीपावली का त्यौहार अन्तर में अनोखी आभा उत्पन्न करता है । अमावास्या की काजल जैसी रात्रि में टिमटिमाता हुआ दीपावली का प्रकाश कितना सुन्दर दृश्य उपस्थित करता है इस बात को स्पष्ट करते श्रीजी महाराज कहते कि दीपक से फैलता हुआ प्रकाश कितना सुख देता है, यह विजली या वडवानल की अग्नि में संभव नहीं है । अंधकार तो केवल रात्रि पर्यंत ही रहता है । जैसे सूर्यनारायण के उदित होते ही अंधकार नष्ट हो जाता है । ऐसे ही दीपक भी सतत प्रज्वलित रहकर अपने प्रकाश से अंधकार को दूर करता रहता है । जब तक दीपक में तेल है तब तक अन्धकार आ नहीं सकता ।

श्रीमद् भागवत पुराणादिक शास्त्रों में जीव के कल्याणार्थ अहिंसा आदि का तथा मनुष्य जिस कर्म को करने से सुखी हो उसका प्रतिपादन किया है । (शि. ८) सम्प्रदाय के सभी स्त्री-पुरुष, त्यागी-गृहस्थ सभी के सुख के लिए श्रीहरिने आज्ञा किया है कि अन्तर में जब तक सदाचार का एक भी अंश रहेगा तब तक जीवनरुपी दीपक को आंच नहीं आने पायेगा ।

दीपावली आती है तो व्यापारी अपने हिसाब-किताब को व्यवस्थित करता है । श्रीजी महाराज ने बड़ा सुंदर दृष्टांत दिया है कि जैसे किसी बनिया के खाते को महीने-महीने देते जायें तो सरल हो जाता है वही एकत्रित करके देंगे तो भार होगा । इसी तरह विचार करते रहना चाहिए । (ग.प्र. ३८) इस प्रकार व्यावहारिक उदाहरण देकर श्रीहरिने मन को भगवान के चरित्र में लगाने की बात कही है ।

अनंतकोटि ब्रह्मांड के अधिपति इस पृथ्वी पर पधारे इससे बडा उपकार इस पृथ्वी के मानवों के लिए क्या हो सकता है । ४९ वर्ष की छोटी लीलाकाल में श्री सहजानंद स्वामी महाप्रभु ने केवल विचरण ही किया है । उत्तर छपैयाधाम से लेकर समग्र भारत वर्ष की यात्रा ही तो की है । वर्णीवेश धारण करके अपने सिद्धांतों को जहाँ गये वहाँ स्थापित किये । धर्मधुरा धारण करने के बाद भी जीवमात्र का कल्याण ही जिसका एकमात्र हेतु था । समग्र जीवन में इन्होंने जो लीला चरित्र किया वह इतना अद्‌भुत पावन कारी है कि अनंत जन्मोतक इनके महिमा का गान करें तो भी पार नहीं पा सकते । नंद संतो द्वारा रचित लीला चरित्रों से परिपूर्ण गद्य पद्य ग्रंथ तो संप्रदाय की धरोहर है ।

एक समय श्रीजी महाराज गढपुर आये, उस समय स्वस्यानंद स्वामी को खूब ज्वर आया था । ज्वर से शरीर कांप रही थी । यही रुणता श्रीहरि का दर्शन नहीं होने देगी । स्वयं सिद्ध हस्त थे, स्वयं शरीर में से बुखार को निकाल दिये और उसे लगदी में ट्रांसपर कर दिये । श्रीजी महाराज पधारे तो खडे होकर दंडवत् प्रणाम करने लगे । बगल में लगदीभी उन के साथ ऊपर नीचे होने लगी । यह देखकर महाराज ने कहा, स्वामी ? यह आपने क्या जादू कर दिया है ? स्वामी ने कहा महाराज ! माफ करना मुझे बुखार था और आप आने वाले हैं यह जानकर बुखार को गुदडी में समादिये हैं । महाराजने स्वामी को सुंदर ज्ञान दिया । श्रीहरिने कहा - "स्वामी आपने यह क्या किया ? देह कि जो पीडा लिखी होगी वह आपको विना भोगे छुटकारा नहीं है । इसलिए ज्वर को पुनः ग्रहण कर लीजिए । देह का जो धर्म है उसे करने दीजिए । यदि पीडा सहन न हो तो हमारी लीलाओं का स्मरण करिएगा, उसी से शांति मिलेगी ।

स्वामी को अपनी भूल समझ में आ गयी और महाराज की आज्ञा के अनुसार पुनः ज्वर से ग्रसित हो गये । बाद में भगवान के चरित्र का स्मरण करते रहे ।

बाघरी कुल में उत्पन्न सगराम भगत का कूबा हो या जोधा भरवाड का नेहुडा हो, महाराज जाति-पांति - कुल कुटुम्ब इत्यादि का विना विचार किये हुए उसके घर सामने चलकर गये हैं । महाराज जिन-स्त्री-पुरुष को मिले हैं उसके घर गये हैं, इन सभी प्रसंगो से सम्पृक्त यदि ग्रन्थ बनाया जाय तो सम्भवतः विश्व का सबसे बडा ग्रन्थ होगा । इतना असंख्यपावन कारी चरित्र है ।

श्रीजी महाराज ने अपनी मूर्ति का सुख सभी सत्संगियो को दिया है । वह इतना दिव्य है कि इसका अनुसंधान स्वयं होता ही रहता है । यह सुख निरंतर नवीन का नवीन ही रहे इसके लिए मंदिरो का निर्माण किया । आचार्यपद की स्थापना की । सत्शास्त्रों की रचना करवाये । इस त्रिगुणात्मक सत्संग की रचंना ही ऐसी अद्भुत है कि इसी प्रसंग पर ब्रह्मानंद स्वामी कहते है कि - आप "मारे तो दहाड़ी - दहाड़ी छे दीवाली"

नित्य प्रातः उठकर पूजा करते समय मंगलाचरण द्वारा श्रीहरि का ध्यान करने में आता है वह इतना दिव्य है कि मानो महाप्रभु की मूर्ति सन्मुख खड़ी हो गयी हो ।

विश्वेश छो सकल विश्व तणा विधाता,
दाता तमे सकल मंगल, शांति दाता ।
माटें तमारुं कल्याणनिधि सत्यनाम
साष्टांग नाथ तमने करुं हुं प्रणाम,
अज्ञानपाश कल्पा करि कापी नांखो
नित्य प्रभु तव पदे ममवृत्ति राखो
भक्तों पालन करो प्रभु सर्वाम्
साष्टांग नाथ तमने करुं हुं प्रणाम ।

हे प्रभु ! आपके निर्भय चरणारविंद में मेरे मन की वृत्ति सदा बनी रहे इतनी कृपा करना । हे महाराज ! हमारे अज्ञानरुपी पाश को सदा के लिए काट कर यथार्थ स्वरुप का ज्ञान हमें प्राप्त हो इतनी कृपा अवश्य कीजिए । प्रभु सहजानंद ! आपको हम साष्टांग प्रणाम करते हैं ।

दीपावली तथा नूतन वर्ष का इस मंगलकारी पर्व के अवशर पर उपरोक्त मंगलाचरण को अंतर में रखकर, उन्हीं के लीला का नित्यगान करने का संकल्प करें जिससे श्रीहरि का सामीप्य मिल सके ।

श्रीमद् भगवद्गीता में भी भगवान श्रीकृष्णने कहा है कि जगत में ज्ञान जैसी कोई पवित्र नहीं है । वह ज्ञान क्या है ? श्रीहरि के स्वरुपका निश्चय पूर्वक ज्ञान ही यथार्थ ज्ञान है ।

नूतन वर्ष के नूतन प्रभात में श्रीहरि के स्वरुप का यह दिव्य ज्ञान सभी को प्राप्त हो ऐसा आशीर्वाद प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री सभी को दें ऐसी उन्ही के श्रीचरणों मे प्रार्थना के साथ जयश्री स्वामिनारायण ।

अहमदाबाद मंदिर में सं. २०६२ का डट्टा प्रकाशन

अहमदाबाद श्री स्वामिनारायण मंदिर की तरफ से प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से सं. २०६२ के व्रत-उत्सव त्यौहारों की यादी वाला डट्टा प्रकाशित किया गया है । जो मंदिर के साहित्य केन्द्र से मिलेगा । इसके साथ सर्वोपरि श्री नरनारायणदेव की सुन्दर तस्वीर वाला आकर्षक कलंडर भी तैयार किया गया है । जिसका वर्ष पर्यन्त श्री नरनारायणदेव का दर्शन हो सकता है । जिससे दोनो एक साथ लगाया जा सकता है ।

अहमदाबाद मंदिर की तरफ से नूतन वर्ष का कलन्डर प्रकाशित

श्री स्वामिनारायण मंदिर अहमदाबाद की तरफ से जनवरी २००६ से दिसम्बर २००६ के वर्ष की तिथि त्यौहार-उत्सव के यादी के साथ भगवान की तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के अलौकिक दिव्य तस्वीर को अलौकिक विविध रंगी सुंदर केलेंडर में प्रकाशित किया गया है । स्वजनों को स्मृति के रुप में, अच्छे शुभ प्रसंग में तथा व्यापार धंधा की जाहरात के लिए इस केलेन्डर के इच्छुक हरिभक्तों को यह केलेन्डर अत्यन्त उपयोगी होगा ।

- कोठारी स्वामी

एक अमेरिकन के जीवन का परिवर्तन

अमेरिका जैसे भौतिकवादी देश में विगत तीस वर्षों से श्री स्वामिनारायण सम्प्रदाय के श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्यश्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्रीने सर्व प्रथम I.S.S.O. की स्थापना करके मूल श्री स्वामिनारायण संप्रदायका पाया रोपण किया । I.S.S.O. संस्था के नीचे आजतक अनेकों मंदिरो कां निर्माण हुआ । जिसमें प.पू. महाराजश्री के साथ वर्तमान प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्रीने युवा पीढी को खूब तैयार किया । दोनो श्रीहरि के अपर स्वरूपों के प्रभावशाली व्यक्तित्व से वहाँ की गोरी प्रजा नियमित अपने मंदिर में दर्शन, पूजा, पाठ इत्यादि सम्प्रदाय के नियमानुसार करते हुए आश्रित हो गयी है । प.पू. आचार्य महाराजश्री के करीब तीस वर्षो का यह अथक परीश्रम तथा अपने स्वयं के प्रभावशाली व्यक्तित्व से विदेश की अर्थात् अमेरिका की धरती पर वहाँ के स्थानिक तथा भारतीय एवं गुजराती सभी हजारों की संख्या में आश्रित हुए हैं । भौतिकवादी देश में सोचा नहीं जा सकता ऐसा वहाँ के लोगों में परिवर्तन हुआ है । इस विषय का हमें कम ख्याल आयेगा ।

विगत मास कोलोनिया मंदिर की मूर्ति प्रतिष्ठा प्रसंग पर अपने दोनो प.पू. आचार्य महाराजश्री पधारे उस समय वहाँ शिकागो में रहनेवाले प.भ. अमरीषभाई छोटाभाई पटेल (जि. महेसाणा कडी) के साथ VO5 शेम्पू बनाने वाली कंपनी में नौकरी करते हुए नील मायर नामक व्यक्ति में एक सत्संगी के संग से परिवर्तित जीवन ।

दोनो अभिन्न मित्र हैं । दोनो का परिवार एक दूसरे के सुख-दु:ख में सम्मिलित होता, विना भेदभाव की मित्रता । परंतु श्री अमरीषभाई कभी-कभी भगवान की बात करते तब नील मायर वहाँ से उठकर चल देते । इतना नास्तिक थे । भगवान यह तो मनुष्य द्वारा बनाया गया शब्द है ऐसा वे मानते थे । फिर भी अमरीषभाई उनके हाउस से अपने शिकागो मंदिर जो सवा छ मील दूर है सपरिवार पैदल चलकर आते, जिस में ७ वर्ष की उनकी पुत्री माधुरी भी चलकर साथ दर्शन करने आती थी इस धार्मिक प्रवृत्ति से वे ज्ञान थे फिर भी वे उसमें रुचि नहीं रखते थे । एकबार नील मायर लंच के समय गुमसुम बैठे हुए थे उसी समय अमरीषभाई उनसे पूछे कि क्यों कुछ हुआ है क्या ? आप किसी बडी चिंता में लग रहे हैं ? तब उन्होने अपनी तकलीफ बताई । इसलिए एकमित्र के नाते तथा सत्संगी होने से दया भाव के कारण श्री अमरीषभाईने भगवान से प्रार्थना करने को कहा । तब नील ने कहा कि तुम्हे भगवान से प्रार्थना करनी होतो भले कर मैं नहीं कहता हूँ । इसमें कोई आश्चर्य कि बात नहीं क्योंकि नास्तिक के लिए क्या कहना ?

शिकागो अपने मंदिर में प्रति शनिवार को सभा होती है । जिस में प्राय: सभी हरिभक्त समूह में कथा, वार्ता, कीर्तन धुनि, आरती सायंकाल को करते हैं । श्री नील मायर के लिए श्री अमरीषभाई ने संध्या आरती में सायंकाल ७-०० बजे श्री राधाकृष्ण, हरिकृष्ण महाराज के पास एक नास्तिक मित्र के लिए भगवान में श्रद्धा हो तथा आस्तिक होकर श्रीहरि का आश्रित बन सके इसके लिए गद् गद् कंठ से विनम्र भाव से प्रार्थनां की तथा सोमवार को नील मायर से यह बात की ।

यथार्थत: थोडी देर के लिए अमरीषभाई की तरफ देखता ही रहा । बाद में कहा कि जो मुश्किल थी वह नजदीक समय में दूर हो आयेगी ऐसा लग रहा है । यही बात समझ में नहीं आ रही यह चमत्कार कैसे हो गया ।

सर्वोपरि श्री नरनारायणदेव पीठ के आचार्य श्री तथा भगवान के छठे वंशज जिसकी प्रतिष्ठा किये वे प्रत्यक्ष अपनी प्रार्थना सुने और परिणाम भी त्वरित देदिये । यह सभी सत्संगी मात्र को ख्याल है । परंतु एक नास्तिक के लिए ज्वलन्त परिणाम मिला ।

थोडे दिन के बाद नील आनन्द करते हुए कहे कि अभी जितना फायदा होना चाहिए उतना नहीं हुआ

है । यह सुनकर अमरीषभाई पुन: भगवान को प्रार्थना करने के लिए कहा तो उस नास्तिक ने सामने से हाँ कर दिया । यह एक ही बार में इतना चमत्कार हो गया कि उस में परिवर्तन आया । लेकिन इस बार शर्त किये कि अब भगवान आप का फायदा करें तो भगवान के लिए आप क्या करोंगे । तो उन्हों ने कहा कि मेरा परिवार भी तुम्हारे परिवार के साथ चलकर भगवान का दर्शन करेगा । तब अमरीषभाई ने कहा कि यह एक नास्तिक कह रहा है । ६॥ मील दूर चलके जाना पडेगा ।

उस समय घडी में ११-५५ बज रहा था, भगवान के शयन में मात्र पांच मिनट ही बाकी था ।

शनिवार के समय की प्रतिक्षा के विना शिकागो मंदिर में विराजमान श्री राधाकृष्णदेव हरिकृष्ण महाराज के पास नील मायर ने आंख बन्द करके भगवान की प्रार्थना की उस समय बहुत सारे लोग एक नास्तिक को आस्तिक होते देख रहे थे ।

श्री अमरीषभाई तथा उनके नास्तिक मित्र की प्रार्थना सर्वोपरि श्री राधाकृषणदेव हरिकृष्ण महाराज ने सुनली और पन्द्रह दिन में ही उन के मनोरथ पूर्ण हो गये । उस समय तो वे इस मूल संप्रदाय के मंदिर में विराजमान देव तथा संप्रदाय के अधिपति को नत मस्तक होकर प्रणाम किये । यथार्थ रूप से उन्हे शुद्ध संप्रदाय का धर्म ख्याल में आया जो विश्व में कही देखने को नहीं मिलेगा ।

इसके बाद की पूनम को वे अपनी पत्नी के साथ अमरीषके परिवार के साथ ६॥ मील तक पदयात्रा करके स्वामिनारायण महामंत्र धुनि के साथ भगवान के दर्शनार्थ निकल पडे । एक सत्संगी के संपर्क में आने से एक नास्तिक यदि आस्तिक हो सकता है तो ऐसे देव को प्राप्त करके अन्यत्र भटकने की कोई जरूरत है क्या ? इस प्रकार के अनेकों उदाहरण विदेश की धरती पर देखने में मिला है । जो इस मूल संप्रदाय के इतिहास में तथा सर्वोपरि श्रीहरि के श्री नरनारायणदेव पीठ की गद्दी के साथ जुडा हुआ है । इस में कोई आश्चर्य की बात नहीं है, यह सभी को ज्ञात है । यह एक चमत्कार नही तो और क्या हो सकता है ?

(अरमरीषभाई छोटाभाई पटेल शिकागो)

पृष्ठ ४ से आगे

श्री नरनारायणदेव महिमा

भी श्री नरानारायण के दर्शनार्थ प्रतिदिन आते हैं । श्रीजी महाराजने कहा कि बाहर रहने वाले भक्त यदि एकादशी को दर्शन करेंगे तो भी प्रतिदिन दर्शन का फल मिलेगा । दूर रहने वाले भक्त यदि श्री नरनारायण देव के स्थापना के दिन भी दर्शन के लिये आयेंगे तो भी ऊन्हे प्रतिदिन के दर्शन का फल मिलेगा ।

कामदेव की मायाजाल से श्री नरनारायण देव लोभित नहीं हुए हैं । इन्द्र द्वारा भेंजी गयी अप्सराये भी भगवान को मुग्ध नहीं कर सकीं ।

अपने इष्टदेव भगवान स्वामिनाराण ने भी श्री नरनारायण देव के लिए वचनामृत में कहा है कि इस संसार में दृढ वह्मचर्य वाले तो एकमात्र श्री नरनारायण देव ही हैं । उन्ही देव के हम आश्रित हैं । इन्ही का भजन करके हम निष्कामी बनें । स्त्री स्त्री माया को जीतने के लिए श्री नरनारायण देव शिवाय कोई नहीं हैं । जो ऊर्ध्वरेतस हैं वे ही श्री नरनारायण देव को एक स्त्र देख सकते हैं अन्य को दो स्त्र में भासते हैं ।

अहमदाबाद मंदिर में परम्परागत समूह शारदापूजन

समस्त श्रीहरि के प्रिय भक्तों को विदित हो कि सर्वोपरि श्री नरनारायणदेव के शुभ सानिध्य में तथा प.पू.ध.धु. आचार्य माहराजश्री के शुभ कर कमलों से विद्वान पंडितो द्वारा मंदिर की प्रसादी की सभा मंडप में आश्विन वद अमावास्या (शुभ दीपावली) के दिन ता. १-११-२००५ मंगलवार सायंकाल ६-०० बजे समूह शारदा पूजन - चोपडा पूजन वेदविधि से धूम-धाम से सम्पन्न किया जायेगा । शारदापूजन में लाभ लेने वाले व्यापारीजन अपना चोपडा (खातावही) संख्या २ का नाम लिखा, पता, फोन नंबर के स्टीकर के साथ कपडें में बांधकर कोठार में जमा कराने की पक्की पहुंच प्राप्त करलें ।

खातावही स्वीकार करने की अंतिम ता. ३०-१०-२००५ है इसके बाद स्वीकार नहीं किया जा सगेगा ।

- कोठारी स्वामी

शरदपूर्णिमा - शरदोत्सव

- शा. घनश्यामप्रकाशदास (नारायणघाट)

पूर्णिमा अर्थात् सोलह कला से पूर्ण प्रकाशमान शीतकिरण युक्त चन्द्रमां की चांदनी जैसी शीतलता हरिभक्तों के जीवन में बनी रहे ऐसी बात श्रीहरिने की है । सूर्य के ताप जैसी दुर्वासा की तेज स्विता को प्राप्त करने के लिए महाप्रभुने कभी प्रेरणा नहीं दी लेकिन पूर्णिमा की शीलतता प्रदान करने वाले संतो के अनुगमन की बात अवश्य की है । उसमें भी ऋतुओं की रानी शरद पूर्णिमा के दर्शन की लालसा बदजाती है । वर्षाऋतु में वस्मदेव आषाढी मेध वरस-वरस के विश्रान्त हो गये । धरतीमां के भीतर से नये अंकुर नव पल्लवित होकर धरती माता को सजाने में सहयोग करने लगे, शिशिर की ठन्डी हवा मन्द मन्द गति करने लगी, समग्र वातावरण में एक परिवर्तन सा होने लगा । इसी परिप्रेक्ष्य में संसार का जीव उन्दाभरी प्रकृति का आनन्द लेने के लिए उत्कंठित होने लगा । प्रभु के भक्त इस प्राकृति सौन्दर्य की तरफ आकृष्ट हुए विना प्रभु के रस में रंगे रहते हैं । ऐसे हरिभक्तों के हृदय में आनन्द की लहर लेने के लिए हरि भी लालायित रहते हैं । ऐसा ही एक प्रसंग वृंदावन की कुंजगलियों में गोपबालास्मी लहरें यमुना के किनारे लहराती हुई एकत्रित होने लगीं । इसके साथ ही गोकुल के गोपों का हितकरने वाला कृष्ण स्मी महासागर भक्तों की भक्ति में डूबजाने तथा डुबादेने के लिए लहरी बना हुआ था । उस समय शिवजी के तांडव नृत्यु के सामान प्रभु भी स्व स्वस्म के सुख में तरबोर कर देने के लिए अंगडाई भरने लगे । जितनी गोपांगनायें थीं उतने स्वस्म प्रभु ने धारण किया । इसके बाद धीरे-धीरे रास प्रारम्भ हुइ । जिसमें देवताओं ने दुंदुभी गन्धर्वों ने गीत तथा स्वर के ताल गाने लगे । उद्यानों में महंकती फुलों की कलियों को उन्मत करती हुइ रती देवी भी अपने स्वस्म को प्रदर्शित कर रही थी । प्रभु के साथ रास करने वाले भक्तों के भाल पर पसीने के बूंद झलकने लगे थे । वैसे ही चन्द्रमां की शीतल चांदनी लोगों को आनन्दित कर रही थी । सभी अपने भान को भूल गये थे । सभी कृष्णमय हो गये थे । प्रभु मिलन की पराकाष्ठा में सभी ओतप्रोत हो गये थे । प्रभु भी अपने स्वस्म को भूलकर गोपीमय हो गये थे । सभी गोपियां प्रेम के परिपाक में कृष्ण स्वस्ममय बनी गयी थी । इस समय का वर्णन करते हुए स.गु. मुक्तानंद स्वामी ने गाया है कि -

मुक्तानन्द व्हालो फुल्या गोपीना रंगे ।
गोपी अंगोअंग फुली श्यामना संगे ;
फुलडा धारी रे अंगे फुलडा धारी
शोभे श्याम सुजाण अंगे फुलडा धारी ।

भगवान स्वामिनारायण ने शिक्षापत्री के १११ वें श्लोक में गोपियों की इस मूर्ति का यथायोग्य मूल्यांकन करके आध्यात्मिकता उल्लेख करते हुए लिखते हैं कि - त्यां राधादि भक्त नथी पण एकला श्रीकृष्ण भगवान छे । ऐसा जानना ।

अतिनिम्नकक्षा के आधुनिक कवि, लेखक, या फिल्म जगत वाले इस रासक्रीडा को अपनी अल्पमति के कारण विकृत स्म देदिया है । परंतु श्रीकृष्ण के चरित्रों का शास्वत चिंतन करने के लिए भगवान स्वामिनशायणने वचनामृत ग.प. के ७२ वें में कहते हैं कि जिस प्रकार शुकदेवजीने रासपंचाध्यायी का वर्णन किया और राजा परिक्षित को संशय हुआ तो पूछे कि भगवान का अवतार मर्यादा की स्थापना के लिए हुआ था । वे परस्त्रियों का संग करके मर्यादा का या धर्म का उल्लंधन क्यों किया ? इस प्रकार राजा परिक्षीत के मन में भी भगवान के प्रति दोष भाव उत्पन्न हुआ था । लेकिन शुदेवजी तो भगवान के गुणानुवाद किये । कामदेव ब्रह्मादिक देवों को जीतकर अतिशय गर्वित हुए । उनके गर्व को दूर करने के लिए भगवान ने जैसे बलवान राजा अपने शत्रु को हथियार देकर उससे युद्ध करता है वैसे ही कामदेव जब स्त्रियों का संबंध करता है तो द्विगुणित हो जाता है उसमें भी शरदऋतु में रात्रि के

अनुसंधान पृष्ठ नंबर १६

सद्‌गुरु श्री .महानुभावानंद स्वामी

- चंद्रकान्त मोहनलाल पाठक (गांधीनगर)

संत, कथाकार तथा उपदेशक लोग भगवान की भक्ति में उत्साह बढे ऐसा दृष्टांत देते हैं ।

नारदजी एकबार श्री राम के दरबार में गये । वहाँ एक बड़ा ग्रन्थ देखा । कुतूहलवश नारदजीने ग्रन्थ खोला । उस में अलग-अलग राम भक्तों का नाम था । परंतु हनुमानजी का नाम नहीं था । नारदजी को आश्चर्य हुआ। तुरंत हनुमान के पास चल दिये ।

जय श्री राम की हनुमानजी । श्रीराम के दरबार से आ रहा हूँ, आपको मिलने चला आया ।

आईये देवर्षि ! हमारे प्रभु क्या करते थे ? हनुमानजी ने पूछा ? प्रभु दरबारियों के साथ बैठे थे । लेकिन वहाँ मैने एक ग्रन्थ राम भक्त के नामों वाला देखा जिसमें आपका नाम नहीं था । प्रभुने यह कैसी भूल की है ।

स्थिति प्रज्ञ हनुमानजीने कहा । हमारे प्रभु भूल से परे हैं । भले मेरा नाम लेखपत्र पर न हो तो भी हम प्रभु के दास तो रहेंगे ही । नारदजी यह सुनकर चलने लगे, तो हनुमानजीने कहा कि आप को पता है न कि प्रभु एक डायरी अपने पास भी रखते हैं । नारदजी यह सुनकर पुनः प्रभु के दरबार में आते हैं और प्रभु से प्रश्न करते है आप कोई अलग डायरी भी रखते हैं क्या ?

दशरथनंदन स्मित करते हुए कहे । डायरी रखता हूँ लेकिन उसमें व्यक्तिगत कुछ नहीं है । आप की इच्छा हो तो देख सकते हैं । डायरी के प्रथम पृष्ठ पर ही हनुमाजी का नाम था ।

प्रभु ! आप सभी की नामावली की डायरी एक साथ रखते है तो यह अलग क्यों रखे हैं ? यह समझ में नही आ रहा है नारदजी ने कहा ।

देवर्षि डायरी में ऐसे भक्तों का नाम है जो मुझे याद करते हैं इस डायरी में ऐसे भक्त का नाम है जिसे मैं याद करता हूँ । धन्य हैं प्रभु आप ! और आपकी महानता इससे अधिक धन आपके भक्त हैं जिसे याद करते हैं ।

धर्मकुल प्रकाशक श्रीहरि ने यदि ऐसी डायरी रखी होती तो स.गु. महानुभावानंद स्वामी डायरी में अवश्य स्थान प्राप्त किये होते । भगवान तथा भक्त, स्वामी तथा सेवक में कोई अंतर नहीं । अंतर की एकता "हरि सबदुःखहारी" । ऐसे सामर्त्यवान स्वामी थे ।

उत्तरभारत में कुस्क्षेत्र में लगभग सवासों गाँव दूर कडा गाँव में सं. १८४२ में शुद्ध संस्कारी ब्राह्मण के घर में जन्म हुआ था । बाल्यावस्था से भक्तिमय जीवन प्रारम्भ हुआ । स्वयं इतने ज्ञानी थे कि माता-पिता-भाई सभी को ज्ञान देकर भक्त के मार्गपर लगादिये । घर छोडकर कुस्क्षेत्र चले गये वहाँ एक देदीप्यमान मंदिर देखे । वहाँ ठाकुरजी को जाकर प्रणाम किये । वहाँ के मंहत से मिले पिता तथा पुत्र वहाँ स्क गये । स्वामी वहाँ स्क गये और दीक्षा लेलिए, उनका नाम सेवा दासजी रखा गया । महिमा पूर्वक महंत की तथा ठाकुरजीकी सेवा करने लगे । महंत के सेवादासजी से कहा कि आपमें धर्म, ज्ञान, वैराग्य भक्ति सभी हैं । मेरी वृद्दावस्था है मंदिर का सम्पूर्णभार आप सम्हालो । सेवादास कुछ बोले नहीं । हमें तो प्रभु को प्राप्त करना है। ऐसे बन्धन में रहना नहीं है । दूसरे दिन ही वहाँ से निकल गये । भगवान कृष्ण की द्वारिका में आये । यहाँ ठाकुरजी की १२ वर्ष तक सेवा की। एक दिन रात में सोते समय रणछोडरायने दर्शन दिया और कहा कि आप यहाँ से गुजरात में चले जाइए । वहाँ भगवान का दर्शन होगा और आपका मनोरथ सिद्ध होगा ।

भगवान का दर्शन होगा यह जानकर सेवादास खूब प्रसन्न हो गये। द्वारिका छोडकर चल दिये । सेवादासजी जामनगर आये वहाँ स्वस्थानंद स्वामी लगभग २५० संतो के साथ रहते थे । सेवादास का उन सतो के साथ भेटा हुआ । उनलोगों

से आकर्षण हुआ । सत्संग सम्प्रदाय की भूमिका बनती गयी । संतप्रति दिन स्वामिनारायण भगवान की धुनि करते । सेवादास उस धुनिसे भी आकृष्ट होने लगे ।

स्वामिनारायण कौन हैं ? यह नाम पहलीबार सुन रहा हूँ । एक संत से पूछा ।

महापुरुष ? आपको मैं संक्षेप में कह देरहा हूँ कि जीव का उद्धार करने वाला अक्षरधाम का निवासी सर्वोपरि भगवान हैं । काल-माया तथा अखंड ब्रह्मांड के अधिपति हैं । आत्मा के आत्यंतिक कल्याण के लिए उन्ही का आश्रय ग्रहण करो ।

मुझे तो सुदर्शन धारी भगवान श्रीकृष्ण का सहारा है । शुद्ध उपासना है । एक निष्ठा है । सेवादास ने कहा । संयोग से दैवी संकेत मिला । श्रीजी महाराज का पत्र आया स्वस्मानंद स्वामीने अपने मस्तक पर पत्र लगाकर बांचने लगे । उसमें लिखा था कि आगामी चैत्री पूर्णिमा का उत्सव करने सिद्धपुर जायेंगे । सभी संत वहाँ एकत्रित हों । वहाँ जाने की तैयारी होने लगी । सेवादासजी का भावी वहाँ निश्चित था । सभी संतो के साथ सेवादास भी सिद्धपुर जाने को तैयार हो गये । साथ में श्रीहरि के आने से पूर्व वहाँ पहुँच गये । वहाँ पर स्वामिनारायण भगवान के साथ भेंट हुई । सभी संत स्वामिनारायण भगवान की जय कह कर साष्टांग प्रणाम करने लगे । सेवादास मात्र श्रीजी महाराज को एकटक देखे ही जा रहे थे। उनके अंग प्रत्यंग की शोभा को निरख रहे थे । अंतर हृदय में उतार रहे थे जब दृढ निश्चिय हो गया तब रणछोडराय के स्वप्न का स्मरण करकें कि इतनी दिव्यता भगवान सिवाय कहीं नहीं हो सकती है ।

श्रीजी महाराज गाँव में भोजनार्थ पधारे । भोजन करके वापस आये । हरिसेवादासने प्रभु के चरण में अपना मस्तक रख दिये । स्वस्मानंद स्वमी ने परिचय कराया । सेवादास ने प्रार्थना की हे कृपानाथ ? अपनी सेवा के योग्य मुझे स्वीकार करो । स्मित के साथ स्वीकार करके उन्हे भागवती दीक्षा दिये । उनका नाम महानुभावानंद रख दिये । सिद्धपुर के उत्सव के समय उनकी उम्र मात्र २२ वर्ष की थी ।

श्रीजी महाराज जेतलपुर में इमली वृक्ष के नीचे विराजमान थे । संत भगवान के कीर्तन गा रहे थे । बाद में श्रीहरि ने आनंदानंद स्वामी, महानुभावानंद स्वामी, स्वयंप्रकाशानंद स्वामी, इत्यादि संतो को बुलाया । सभी को आसन पर बैठाया । उनका सन्मान किया । उन्हें सद्गुरु की उपाधि दी । सभी को बुलाकर कहे कि - हे संतो ! हे गृहस्थ भक्तजनों ! आप सभी लोग जिस प्रकार मेरा मान सन्मान करते हो, इसी प्रकार इन सभी स.गु.का मान सन्मान-पूजा करना ।

तेरा गाँव में श्रीमद् भागवत की कथा होनेवाली थी । यजमान के स्म में मावजी भगत थे । सभी के लिए पत्रिका भेंज दी गयी । मिलने वाले में सर्व प्रथम महानुभावानंद स्वामी थे ।

महानुभावानंद स्वामी का मंडल आ रहा है किसी ने समाचार दिया । श्रीहरि भोजन करने बैठे थे, भोजन छोड़कर स्वामी को गले लगाये बाद में भोजन किये ।

महाराज ने एकबार स्वामी से कहा आप व्याकरण पढिये, अच्छा मैं पढूंगा । आप कौमुदी का अभ्यास किजिएगा । आप का अभ्यास परिश्रम पूर्वक हो, मैं आप की भगवत सेवा करदूंगा ।

महाराज की आज्ञा से नित्यानंद स्वामी के पास रहकर विद्याभ्यास किये । श्रीजी महाराजने महानुभावानंद स्वामी को कोरियाबी से बुलालिया । एक आपको काम करना है, आप के सिवाय कोई कर सकता नहीं है । महाराज आप आज्ञा कीजिए । धोलेरा में मंदिर बनाना है वह आप ही से संभव है । महाराज की आज्ञा प्राप्त करके चलने को कहे लेकिन विद्यार्थी उनके पास अभ्यास करते थे इसलिए महाराजने नहीं कर दिया ।

एकदिन वडताल में सभा आयोजित हुइ । सभा में मध्य में अपनी गद्दी तथा दाहिनी तरफ अयोध्याप्रसादजी को तथा उनके साथ महानुभावानंद स्वामी एवं वासुदेवानंद

स्वामी को बैठाये । बाई तरफ रघुवीरजी को तथा उनके दोनो तरफ स्वयंप्रकाशानंद स्वामी एवं अखंडानंद ब्रह्मचारी को बैठाया । सभाजनो को सम्बोधित करते हुए कहा कि ए चार संत दोनो आचार्यो के हाथ है ऐसा सभी मानना ।

वडताल मंदिर में मंडप बांधने का कार्य चल रहा था । सभी संत अपनी कार्यक्षमतानुसार सेवा कार्य कर रहे थे । सभी को गले से मिलने को उस समय कहा लेकिन सभी के हाथ में गारा लगा था । महानुभाववानंद स्वामी मिलने, आये, उन्हे गले लगा लिये ।

दादा खाचर के विवाह प्रसंग पर महाराज पाचदिन तक संतो को भोजन कराकर तृप्त किया था । एकदिन किसी सेवक ने कहा । दही अधिक है तो महाराज ने कहा इस मंगल प्रसंग पर दही शुभ है अधिक सभी को खिलाया जाय । बाद में अवशिष्ट दही को महानुभावानंद स्वामी के मस्तक पर गिराकर स्नान कराने लगे । श्रीजी महाराज संतो पर खूब प्रसन्न होकर कहने लगे ।

हे संतो ! आप लोग जितनी अधिक जलेबी खायेंगे हम उतना ही चरणारविंद उनके छाती में देंगे । चरणारविंद के लालच से शक्ति से अधिक लोग खाने लगे । महानुभावानंद सभी से ११ अधिक जलेबी खागये । लेकिन वे खाये नहीं थे । छिपा लिए थे, यह बात चैतन्यानंद स्वामी देख रहे थे, बाद में महाराज को शिकायत किये कि महानुभावानंद ने ढगा किया है । क्या किया है ? अरे महाराज कपट किया हैं । आपको छला है ? लेकिन क्या ? तव चैतन्यानन्द स्वामीने कहा आपके चरणारविंद के लालच में एजलेबी ले लेते थे लेकिन खाते नहीं थे । उन्हें दन्ड दिया । दन्ड में दूध ही से स्नान करा दिया ।

सूरत के हरिभक्तों के आग्रह पर महाराज संतो के साथ वहाँ के लिए प्रस्थान किये । महाराज ने कहा वहाँ के हरिभक्त खूब प्रसन्न होंगे ।

महानुभावानंद ने कहा प्रसन्न नहीं होगे । महाराज ने कहा क्यों ? महानुभावानंद स्वामी ने कहा वे लोग आपके साथ अधिक संत आयेंगे ऐसी तैयारी किये हैं, और आप थोडे संत लेकर जा रहे है, उनकी सब तैयारी में किरकिरा हो जायेगा ।

महाराज ने कहा महानुभावानंद स्वामी ठीक कह रहे हैं । ऐसा करो कोई तेज गति वाले संत को नजदीक में जितने भी संत मिले उनहें बुला लायें ।

महानुभावानंद स्वामीने माधवदासजी को त्वरित गति से जाकर अगल-बगल के गाँवो के संत को बुलाने हेतु भेंद दिया । बडी संख्या में संत मंडल सूरत गया । कपडवंज तहसील में मंदिर निर्माण का कार्य चल रहा था, लकडी की आवश्यकता पडी, उस समय स्वामी ने एक हरिभक्त से बुलाकर कहा तो नहीं इसलिए किया कि स्वामी की वाणी में ओज था, शक्ति थी, भाषा की मधुरता थी, इसलिए स्का काम प्रारंभ हो गया, उस समय अंबाबाईदास पटेल को आशीर्वाद दिया कि आप के यहाँ हमारे जैसे बडे मुक्त पैदा होंगे और संतो की सेवा करेंगे ।

स्वामीने अंबाईदास के यहाँ से सात नींम का वृक्ष लिया और उनके घर में सात बेटे पैदा हुए । उस में से तीन तो बालकपन से ही त्यागी हो गये - जिसमें, नारायण सेवादासजी, स. घनश्यामजीवनदासज तथा स. कृष्णजीवनदासजी अहमदाबाद में आज भी इनका मंडल है । चौथापुत्र ३५ वर्ष तक गृहस्थ रहकर त्यागी हुआ, जिनका नाम महापुरुषदासजी हुआ ।

मूली का मंदिर बन रहा था तब महानुभावानंद स्वामी, ब्रह्मानंद स्वामी की सहायता में मूली रहे थे । रामपरा के एक भक्तना डोदाकी भक्ति देखकर महानुभावानंद स्वामीने कहा भगत आपका भगवान कल्याण करेंगे । परिणाम स्वरुप उनको घर हुआ, विवाह हुआ, वेटा-पैदा हुआ, हस्तरीके से सुखी हो गया ।

इन सभी प्रसंगो से ज्ञात होता है कि महानुभावानंद भगवान के कितने नजदीक थे । श्रीजी महाराज को स्वामी के लिए अति प्रेम था । स्वामी भी महाराज की आज्ञा का

कभी उल्लंजन नहीं करते थे । श्रीहरि की अकंड मूर्ति का चिंतन करते । सत्य संकल्प थे । उनकी कार्यक्षमता अजोड थी । अहमदाबाद में श्री नरनारायण देव की जब प्रतिष्ठा हुई तब लाखों लोग आये थे । उस समय सभी की देख रेख के लिए स्वामी महानुभावानंद को श्रीजी महाराजने नियुक्त कर रखा था ।

श्रीजी महाराज ने महानुभावानंद स्वमी से कहा, हे - मुनिवर ! भक्तजन जिसका श्रवण करने से मेरे अक्षरधाम में जांय ऐसा मेरा जीवन चरित्र लिखिये । जिस में सर्व अवतारों के अवतारी, देव-मनुष्यादि सभी जिसकी आज्ञा में रहते हैं, सर्वोपरि सामर्थ्य वाला इस प्रकार का उसमें विना डर - संकोच के प्रतिपादन किजिए कोई कुछ भी बोले उसे बोलने दिजिएगा । जब तक आप मेरा जीवन चरित्र लिखेंगे । तब तक हम आपके पास रहेंगे ।

श्रीहरि की आज्ञा से, आशीर्वाद से, प्रेरणा से महानुभावानदं स्वामी ने श्रीहरिकृष्णलीलामृत नामक ग्रंथ लिखा । स्वामिनारायण भगवान के आश्रितों को यह ग्रन्थ शांति सागर है। भक्ति मार्ग के साहित्य में उत्तम स्थान पर विराजमान श्रीहरि के स्वस्म समान यह ग्रन्थ है ।

बलदाणा के अरजण भगत विमार थे । स्वामी उन्हें देखने गये । भगत पैर पकड कर प्रार्थना की, तब स्वामीने कहा ४ दिन में हम अक्षरधाम मे ले जायेंगे । ऐसा ही हुआ । उन्हे अक्षरधाम में भगवान के पास ले गये ।

महानुभावानंद स्वामी में श्रीजी महाराज को प्रसन्न करने का प्रधान गुण था । स्वामी अपना अंतिम जीवन अहमदाबाद में विताये । वे संवत १९१३ जेठ सुद चतुर्दशी (ता. ६-६-१८५७) शनिवार को ७१ वर्ष की उम्र में अक्षरनिवासी हुए । पवित्र साबरमती के किनारे जहाँ उनकी पंच भौतिक शरीर का अग्नि संस्कार किया गया था वहाँ पर उन्हीं के मंडल के संतोने आरस का मंडप बनवाया है । उसका दर्शन करने से भी मनुष्य का मनोरथ पूर्ण होता है । श्रीहरि में स्नेह भक्ति बढती है । उसकी आत्मा को शांति मिलता हैं । यही उस समाधिस्थलका चमत्कार है ।

पृष्ठ १२ से आगे

शरदपूर्णिमा - शरदोत्सव

समय की क्या बात ? ऐसे समय में भगवान श्रीकृष्ण ने कामदेव को जीत लिया और स्वयं अखंड ब्रह्मचारी बने रहे, उर्ध्वरेतस् कहलाये । कामदेव का गर्ब चला गया । ऐसा अलौकिक सामर्थ्य भगवान सिवाय दूसरे में कभी संभव ही नहीं है । शुकदेवजी भगवान के सामर्थ्य को जानकर चरित्र का गान किये, लेकिन राजा परिक्षित को समझ नहीं आयी तो दोष के भागी बने ।

वचनामृत ग.प्र. ४२ वें में भगवान कहते हैं कि परमात्मा श्रीकृष्ण भगावन के साथ गोपियों ने काम बुद्धि से प्रेम किया तो भी भगवान की माया से तरगयी और गुणातीत होकर निर्गुण ऐसे भगवान के अक्षरधाम को प्राप्त की क्योंकि श्रीकृष्ण भगवान स्वयं साक्षात पुरुषोत्तम गुणातीत थे । यह रास मात्र ऐतिहासिक ही नहीं, अपितु धार्मिक, अध्यात्मिक तथा भक्ति योग का एक उत्तम प्रसंग था । शरद पूर्णिमा स्वयं धन्य हो गयी । भगवान स्वामिनारयण ने भी इस उत्सव में नया प्राण भरकर धर्म नियम की मर्यादा में सुरक्षित करके संत, हरिभक्त, तथा महिलाओं का विभाजन कर दिया । पंचाला गाँव में स्वयं भव्यातिभव्य दिव्य रास खेल कर चिर अविस्मरणीय बना दिया । निंदा, टीका या समाज के नास्तिक्-आस्तिक, किशोर या युवान किसी वर्ण का या कोई देश का कोई भी हो कभी आचरण की प्रेरणा न ले सके इस प्रकार के ज्ञान की सरिता प्रवाहित की ।

वर्तमान काल में प.पू. आचार्य महाराजश्री १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी की उपस्थिति में तीर्थधाम नारायणघाट के विशाल प्रांगण में ता. १६-१०-०५ रविवार को रात्रि में ९ से १२ बजे तक उत्सव का आयोजन किया गया है । इस अवसर पर सभी मोक्ष भागी हरिभक्तों को भावपूर्वक आमंत्रण है । उपरोक्त कार्यक्रम में संतो के साथ प्रभुमय बनने के लिए रासक्रीडा हेतु अवश्य आप पधारे ऐसी आर्तभाव अभ्यर्थना ।

सत्संग बालवाटिका

संपादक : शास्त्री हरिकेशवदासजी (गांधीनगर)

वर्षोवर्ष का हिसाब

- शास्त्री हरि स्वामी (गांधीनगर)

वर्षो पहलेकी घटना है वैज्ञानिक खोज धीरे धीरे आगे बढ रही थी । नाना प्रकार के संशोधन में वाज्ञानिक लोग लगे रहते हैं . इसी खोज के भीतर उनकी दृष्टि चन्द्र पर पडी और जैसे तैसे करके चन्द्र पर पहुंचने की कोशिष करने लगे । लेकिन यह कोई छोटी बात नहीं है । फिर भी वैज्ञानिकों का अथक परीश्रम सार्थक हुआ और अवकाशयान तैयार किया गया जिससे अवकाश यात्री चन्द्रलोक तक पहुंचने में सफल हो सके । उन्हे ऐसी तालिम दी गयी थी कि वे निर्विघ्न वहाँ जा सकें परिणाम स्वस्म निश्चित समय पर आकाशयान को छोड़ा गया । थोड़ी ही देर में देखते - देखते यान अदृश्य हो गया । अंदर बैठे हुए यात्रिको के लिए एक नया अनुभव था । अन्दर बैठे हुए - सभी क्रिया कर सकें ऐसी व्यवस्था थी । बाहर देखने में केवल आकाश ही दिखाई देता था ।

कितने दिन बीत गये लेकिन कहीं चन्द्रलोक का नामोनिशान ही नहीं था । एक यात्री को ऐसा विचार आया कि पता लगाना चाहिए कि अपना यान चंद्रलोक की तरफ जा रहा है या वापस धरती की तरफ जा रहा है । लेकिन यह जानकारी कैसे हीगी । दूसरे ने कहा अपने पास यह दुर्बीन है जिससे हम ऊपर चन्द्रलोक तथा नीचे धरती दोने को देख सकते है । यदि यन्द्रमा बड़ा दिखाई दे और धरती छोटी दिखाई देने लगे तो समझना है कि अपना यान चन्द्र की ही तरफ गति कर रहा है ।

प्रिय भक्तजन ! आप सभी को ऐसा नही लगता कि यह शरीर स्मीयान भगवान के मार्ग पर मोक्ष मार्गपर जाने के लिए मिला है । कितनी दीपावली वीत गयी और कितनी बीत जायेगी । कितने नूतन वर्ष आयेंगे और जायेंगे । तो क्या हमारे दिन मोक्ष के मार्ग पर बढ रहे हैं या संसार के विषय की तरफ बढ रहे है इसका अन्वेषण अवश्य करते रहना चाहिए ।

स्वामिनारायण भगवान ने प्रथम के अडती सवें वचनामृत में कहा है कि जो सत्संगी हो जब से सत्संग में आये हो तब से मन में विचार करना चाहिए कि प्रथम वर्ष में मेरा मन ऐसा था दूसरे वर्ष में ऐसा था । भगवत् भक्ति कितनी है और संसार की वासना कितनी है । इस प्रकार विवेक पूर्वक विचार करते रहना चाहिए । इसी प्रकार का विचार करने के लिए दीपावली आती हैं ।

पंचाला के प्रथम वचनामृत में भी श्री स्वामिनारायण भगवानने यही स्पष्टता की है । जैसे कोई चिराग नदजीद में जितना प्रकाश देता है उतना दूर से नहीं देता । इसी प्रकार नजदीक का सुख किंचित कर होता है सम्पूर्ण सुख तो भगवान के चरण में हैं । जितने दूर भगवान से होते जायेंगे । उतनी सुख में न्यूनता आती जायेगी । संसार भी छोटा होता जायेगा । भगवान का स्वस्म बडा लगता जायेगा । यही भगवान की तरफ बढने की स्थिति है ।

अन्तर में भगवान की भक्ति, सत्संग, उपासना रुपी ज्योति जलती रहे और अज्ञान रुपी अन्धकार का नाश होता रहे तथा अपना यान भगवान की तरफ उत्तरोत्तर बढता रहे जिससे यह लोक तथा परलोक दोनो सुखी बने ऐसी परमकृपालु स्वामिनारायण भगवान के चरणों में प्रार्थना के साथ बालवाटिका वाचको को जयश्री स्वामिनारायण के साथ नूतनवर्षाभिनन्दन ।

•

सुरक्षित रहने की उपाय

- साधु श्रीरंगदास (गांधीनगर)

जगत में सभी लोग सुख के लिए दौड़धाम करते है । अनेक प्रकार का प्रयत्न करते है । फिर भी सुखकी यथार्थ प्राप्ति नहीं होती है । इसका सच्चा क्यां है तो उसका पता

के चरण में'' इसीलिए तो प्रेमानंद स्वामीने कीर्तन में कहा है कि -

पुरुषोत्तम सहजानंद जाने सुख राखी,
प्रेमानंद आयो शरण चरण को निवासी ।

जो भगवान की शरणागति स्वीकार लेता है, जो भगवान को दृढता से पकड़े रहता है वही जगत के त्रिविधताप से बच सकता है । इस के अलांवा सभी फंसते जाते हैं ।

एक महात्माजी भिक्षा मांगने निकले, एक गाँव में प्रवाश किये आनंदित स्वभाव वाले उन महात्माने नारायण हरे का उच्चारण किया । उस समय भीतर बैठी हुई पत्नी ने समझ लिया की कोई संत आये हुए है । लेकिन उस समय वह बहनजी आंटा पीस रही थी । यह दृश्य महात्माजी देख रहे थे । अरे ! यह क्या है, उस दृश्य को देखने के साथ ही महात्मा जी रोने लगे । अगल बगल के पड़ोशी एकत्रित हो गये । देखो न मैं अंदर आंटा लेने गयी इतने में महात्माजी रोने लगे, इतने में उस बहन का पति आ गया और महात्माजी से माफी मांगी । महात्माजी आप मेरे दरवाजे पर मत रोइये, हमसे कोई भूल हो गयी हो तो माफ कीजिए । फिरभी महात्माजी का रोना बन्द नही हुआ ! सच्चे महात्माजी के दुःख को जगत के जीव नहीं समझ सकते । उसे तो महात्मा ही समझ सकते है या भगवान समझ सकते है लेकिन जगत नहीं । उन महात्माजी को रोते देखकर सभी को चिन्ता हो रही थी उसी समय दूसरे महात्माजी आ गये । उन्होंने देखा कि महात्माजी रो रहे हैं तो उनका कान पकडे और उन्हे उस चक्की के पास ले गये । वहाँ लेजाकर चक्की को बताया तो महात्माजी आनंदित हो गये । हंसने लगे । हंसते हुए चले गये । सभी को आश्चर्य हुआ कि किस कारण उनका रोना बन्द हुआ और हंसते हुए चले गये ।

महात्माजीने बताया कि बहन जब चक्की में आंटा पीस रही थी उस समय उन महात्माजीने देखा कि सुंदर मोती जैसे दाने भीतर जाते हैं और तुरन्त ही आंटा बन जाते हैं । महात्माजी विचारने लगे कि भगवान की माया भी ऐसी ही है । इस में चाहे जैसा भी ज्ञानी हो लेकिन उस माया की घंटी में पीसे बिना रह नहीं सकता है । इसी विचार से महात्माजी रोने लगे थे । उनकी चिंता का समाधान नहीं हो पाया था । जब दूसरे महात्माजी आये और यथार्थ ज्ञान करवाये तब महात्माजी का रोना बन्द हुआ । वे प्रसन्न हो गये उन्हें रहस्य समझ में आ गया । ठीक यही स्थिति इस जगत के जीव की है, जैसे चक्की के खीले के बगल में जो गया वह पीसाजाता है जो बाहर रह गया वह बच गया । ठीक यही स्थिति भगवान की है जो उन केपास गया वह उन्हीं में लीन हो जाता है । जो रह गया वह भटक जाता है । इसलिए भगवान कहते हैं कि तू मेरी शरण में आजा, तुझे कुछ करने की जरूरत नहीं है माला कम फेरोंगे तो भी, तप कम करोंगे तो भी मेरी शरणागति में आओंगे तो माया तुम्हारे पास नहीं आसकेगी । तुम माया से मुक्त हो जाओगे ।

इसलिए महाराज ने वचनामृत में कहा है कि - जिसे अपने कल्याण की चाहना हो वे भगवान को पहचान कर उनकी शरणागति में जाते हैं तथा दृढ विश्वास रखते है, उन्ही की आज्ञा में रहकर भक्ति करते हैं, उनका कल्याण निश्चित है । भगवान जब पृथ्वी पर आते हैं उनके आश्रय में रहने वाले संत का भी आश्रय जीव को कल्याण देता है ।

इसलिए प्रिय भक्तों ! यह ध्यान रखना कहीं सुख का पता खो न जाय । भूल न जाय । यदि इतना ध्यान रखोंगे तो भगवान की शरण में सदा सुख ही सुख है ।

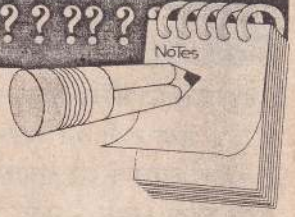
प.पू.ध.धु. आचार्यश्री १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के आशीर्वाद से तथा अ.सौ. लक्ष्मीस्वसा प.पू. गादीवालाश्री के सांनिध्य में

महिला सत्संग सभा

ता. १६-१०-२००५ रविवार, दोपहर १-०० बजे से ५-०० बजे तक उपरोक्त प्रसंग पर लाभ लेने हेतु खास आमंत्रण है ।

स्थळ : श्री स्वामिनारायण मंदिर कांकरिया, अहमदाबाद

?????????????? प्रश्न पेटी ??????????????



साधु भक्तिनंदनदास गुरु पी.पी. स्वामी (जेतलपुर गुरुकुल)

प्रश्न : १ लक्ष्मीजी के पिता कौन हैं ? शास्त्रमें लक्ष्मीजी का क्या नाम है ?

प्रश्न : २ जहाँ श्री नरनारायणदेव रहते हैं, उस स्थान को चार युग में किन किन नामों से जाना जाता है ?

प्रश्न : ३ शतानंद स्वामीने किस सरोवर में डुबकी लगाई और किस जगह निकले, वह सरोवर कहां है ?

प्रश्न : ४ व्हालो भरत खंड ना नरनारने, पोते तप करीने आपे फल सोय,
बद्रिपति प्रबल प्रताप छे, इस पद के रचयिता कौन है ?

प्रश्न : ५ अरे स्वामी ! बगल में चल रहे हो, इसी लिए आपको कांटे पत्थर धंस रहे हैं । इसलिए मेरे पीछे चलिये, "यह वाक्य किसने किससे कहा था ? उत्तर में उन्होंने क्या कहा ?

प्रश्न : ६ भाव्यं शमदमक्षान्ति सन्तोषादि गुणान्वितैः ।
ब्राह्मणैः शौर्य धैर्यादिगुणोपेतैश्च बाहुजैः ॥

प्रश्न : ७ ब्रह्माजी के मानस पुत्र कौन है ? जो भक्ति सूत्र के आचार्य हैं ?

सितम्बर २००५ महीने के प्रश्नपेटी का सत्यउत्तर तथा उत्तर देने वालों का नाम ।

(१) ध्रांगध्रा में राम महोल द्वाराकादास के पास । (२) गोपालानंद स्वामी ने कहा कि "इस लकड़ी के खंभे को कभी वासना का विचार आवे ? आज से इस लकड़ी के खंभे में वासना होगी तो तुम्हारे में होगी, एकही झटकेमें नरसीभाई पूर्ण निर्वासनिक बन गये । (३) शिक्षापत्री में ११६वाँ श्लोक । (४) सरजूदास नाम से । (५) ग.प्र. ७० वें वचनामृत में । (६) जड भरत थे । "जनुनी जीवोंरि गोपीचंदजी पुत्र ने पेर्यो वैराग्यजी....." के ९वें पद में "अमे जडभरत जोगिया इच्छु नही वै भोगजी..." । (७) उद्धव सम्प्रदाय जानना ।

१. सांख्ययोगी बा (माधापर-कच्छ)
२. रोहित, वैशाली, कृपा (जीरागढ)
३. कंचन बहन तथा बाबुभाई तथा निलेष शैलेष (रतनपर - सुरेन्द्रनगर)
४. मृदुला बहन वी. सोनी (नवावाडज)
५. मेधाबहन कमलेशकुमार पटेल
६. अंजना बहन मनुभाई पटेल (नांदोल)
७. स्वा. भक्तिविहारीदास (हळवद)
८. अधारा त्रिभोवनभाई लक्ष्मणभाई (नवावाडज)
९. अमृतभाई क. मोदी (सोजा)
१०. डाभी मफाजी वी. पटेल (चांदलोडिया)
११. नागजीभाई सरदारजी (डांगरवी)
१२. शारदाबहन कांतिभाई पटेल (नांदोल)
१३. गोरधनभाई वी. सीतापरा (अमदावाद)
१४. उर्मिलाबहन भरतभाई (नवावाडज)
१५. कैलासबहन विष्णुभाई पटेल (नांदोल)

सत्संग समाचार

अहमदाबाद मंदिर में झलझीलणी एकादशी का उत्सव

आद्य आचार्य श्री अयोध्याप्रसादजी महाराज के समय में खूब भव्यता से गणेशजी का जुलुश अमदावाद मंदिर में से नीलकता था । इसबार प.पू.ध.धु. आचार्यश्री १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराज १०८ श्री व्रजेन्द्रप्रसादजी महाराजकी उपस्थिति में पू. महंत स्वामी, संत, उत्सवीया मंडल तथा अनेक हरिभक्तों के साथ दोपहर में १-३० बजे श्री नरनारायणदेव तथा गणपतिजी के पूजन के साथ निकाला गया था । प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा लालजी महाराजश्री की उपस्थिति में सभी को आनंद मिल रहा था ।

मंदिरमें लाम्बेश्वरकी पोल रीलीफ रोड पर ठाकुरजी के पहुंचते ही मेधराजा भी दर्शनार्थ पधारे थे। मेघराजा आये ही नहीं बल्कि खूब मन प्रसन्न करके बरसात किये । वहाँ से वाहन में मूर्तियों को बैठा कर नारायणघाट मंदिर ले जाया गया था । प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से संतो ने गणपति विसर्जन की विधि करके ठाकुरजी को जल में झुलाया था । सभी को ककडी का प्रसाद दिया गया था । सायंकाल नारायणघाट से कालुपुर मंदिर की तरफ वापस आते समय प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री पधारे थे । उत्सवी मंडल ने प.पू. आचार्य महाराजश्री को सुन्दर गीत तथा धुनि वाद्य यंत्रो द्वारा प्रसन्न किया था । मंदिर में आकर प.पू. महाराजश्रीने संध्या कालीन आरती उतारी थी । संतो तथा भक्तों को केला का प्रसाद दिया गया था ।

- कोठारी स्वामी धर्मप्रकाशदास

एप्रोच मंदिरमें झूलनोत्सव तथा सत्संग सभा

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा महंत स्वामी लक्ष्मणजीवनदासजी की प्रेरणा से एप्रोच मंदिर में ठाकुरजी के समक्ष विविध प्रकार के झूले को सजाकर प्रभु को झुलाकर हरिभक्तोने आनंदका अनुभव किया था । प्रति शनिवार रात्रिमें ९-१५ से १०-१५ तक श्री नरनारायणदेव युवक मंडल की नियमित सत्संग सभा होती है । जिसमें अनेको युवक भाग लेने आते है । ता. ३०-७-२००५ को उत्साही युवकोने व्यसन मुक्ति के लिए एक नाटक प्रस्तुत किया था । ता. ६-८-२००५ को अहमदाबाद मंदिर के महंत स्वामी निर्गुणदासजीने युवकों को शिक्षापत्री के श्लोकों का व्याख्यान करके सदाचारी जीवन जीने का सदुपदेश किया था । जन्माष्टमी का उत्सव धूमधाम से मनाया गया था । *- गोरधनभाई वी. सीतापरा*

इडरश्री स्वामिनारायण मंदिर

पू.प.ध.धु. आचार्य श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा से इडर के महंत स्वामी जगदीशप्रसाददासजी से श्रावण मास में श्री गोपीनाथजी हरिकृष्ण महाराज को विविध प्रकार से झूले में सजाकर दर्शन कराया गया था । जन्माष्टमी का उत्सव रात्रि १२ बजे धूम-धाम से मनाया गया था ।

कुंकडिया (ता. ईडर) मंदिर में श्रीकृष्ण जन्मोत्सव मनाया गया

श्री नरनारायणदेव देश के इडर मंदिर में प.पू.ध.धु. आचार्य श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा से इडर के महंत स्वामी तथा पूजारी गौरीशंकरभाईने ठाकुरजी के समक्ष पालने को सुंदर प्रकार से सजाकर श्रीकृष्ण जन्मोत्सव धूमधाम से मनाया था । गाँव के भक्तों ने दर्शन का लाभ लेकर धन्यता का अनुभव किया था ।

- साधु सत्यसंकल्पदास

उनावा मंदिर में हिमालय दर्शन

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्यश्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा से तथा उनावा मंदिर के महंत हरिवल्लभदासकी प्रेरणा से मंदिर में हिमालय दर्शन को अच्छी तरह सजाकर युवक मंडल तथा हरिभक्तों ने दर्शन का लाभ दिया था । श्रावण मास में शा. व्रजवल्लभदास तथा सुव्रत स्वरूपदासने श्रीमद् भागवत दशमस्कन्ध की कथा सम्पूर्ण मास पर्यन्त करके सभी को लाभ दिया था । *- पा. महेन्द्र भगत*

करजीसण मंदिर में अखंड महामंत्र धूनि

श्री नरनारायणदेव देश के करजीसण श्री स्वामिनारायण मंदिर में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा पार्षद जसुभगत की प्रेरणा से ता. ११-९-२००५ से दूसरे दिन सायंकाल तक सतत दो दिन तक श्री स्वामिनारायण महा मंत्र धूनि को धूमधाम से किया गया था । धूनि में हरिभक्तों की संख्या बहुत अधिक थी । इस प्रसंग पर कोठारी मणीलाल छगनदास की तरफ से मंदिर में रसोई की व्यवस्था की गयी थी ।

- पू. जसु भगत, पटेल योगेशभाई

अरोडा (जूनागाँव) श्री स्वामिनारायण

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से श्री नरनारायणदेव युवक मंडळ द्वारा इडर के महंत स्वामी जगदीशप्रसाददास की प्रेरणा से श्रावण मास प्रतिदिन मंदिर में महामंत्र धुनि तथा

श्रीकृष्ण जन्माष्टमी का झूलनोत्सव का दर्शन कराकर हरिभक्तों को अलौकिक लाभ दिया गया था। - *कनुभाई एम. पटेल*

मोडासा श्री स्वामिनारायण मंदिर

ता. १७-९-२००५ के दिन प.पू.ध.धु. आचार्यश्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री प.भ. श्रेयसभाई कांतिलाल महेता (एडवोकेट) के आमंत्रण पर संत मंडल के साथ पधारे थे। यहाँ के श्री स्वामिनारायण मंदिर में आरती उतारकर सभी को सुंदर दर्शन का लाभ दिया था। सभा में प.भ. के बी. प्रजापति (कोठारी) श्री हर्षलभाई तथा वकीलश्रीने प.पू. महाराजश्री का पूजन अर्चन करके आशीर्वाद प्राप्त किया था। सभा में विद्वान संतो ने सुंदर उद्‌बोधन किया था। प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीने आशीर्वाद दिया था। - *कोठारीश्री*

श्री स्वामिनारायण मंदिर शिरोही (राज.)

श्री स्वामिनारायण मंदिर में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से स्वामी अक्षरविहारीदासजी तथा हरिभक्तों ने मिलकर श्रीकृष्णजन्मोत्सव प्रसंग पर भजन कीर्तन धुनि आदि कर जन्मोत्सव मनाया था। श्री नरनारायणदेव युवक मंडलने सुंदर सेवा का कार्य किया था।

- *श्री न.ना.यु.मं.*

ध.धु. आचार्यश्री देवेन्द्रप्रसादजी केळवणी संस्था का समाचार

गुजरात राज्य कला शिक्षण संध द्वारा अहमदाबाद के ८० जितने विद्यालयों के कक्षा १ से १२ तक १२०० विद्यार्थियों की तत्काल चित्र स्पर्धा १५ अगस्त २००४ के दिन गुजरात कोलेज के पास विर किनारीवाला की खांभी वाली फुटपात पर प्रात ९-०० से १२-०० बजे के बीच में सम्पन्न की गयी थी। जिसमें श्री सहजानंद स्कूल के विद्यार्थियों ने अनेक विषयों पर मौलिक चित्र प्रस्तुत किया था। कक्षा १ से ४ तक के विजेता विद्यार्थियों की नामावली :

शाह सपनभाई ४/ए श्री सहजानंद प्राथमिक शाला

आश्वासन इनाम : दवे मिथिल परेशभाई ४/ए श्री सहजानंद प्रा. शाला

विज्ञान प्रदर्शन में श्रेष्ठ :

श्री सहजानंद प्राथमिक विद्या मंदिर

प्रथम : खनीज में से शुद्ध धातु प्राप्त करना।

शिक्षक - श्री नलेशभाई एन. पटेल

विद्यार्थी १. सुकेशी भट्ट २. निशांत ठक्कर

कृति का नाम - रोकेट

शिक्षिका - रेखा बहन एच. कतीरा

विद्यार्थी १. अंजन देसाई २. दिव्यांग पटेल

उत्तरोत्तर प्रगति हेतु अभिनंदन।

नवा वाडज मंदिर

सुंदर कलात्मक नित नूतन झूले में श्रीहरि को श्रावण मास पर्यन्त हरिभक्तों ने झुलाकर लाभ लिया। ता. २७-८-०५ के दिन जन्माष्टमी उत्सवलीला भव्य रीति से मंदिर में मनायी गयी। रविवार को सत्संग सभा हरिभक्तों के घर रखी गयी थी। जल झीलणी एकादशी को श्री गणपतिजी विसर्जन का उत्सव धूमधाम से मनाया गया।

- *पटेल शंभुभाई हीरजीभाई*

मूली प्रदेश का सत्संग वृत्तान्त

श्री स्वामिनारायण मंदिर मूली में श्रीराधाकृष्ण देव श्रीहरिकृष्ण महाराज के शुभ सांनिध्य में प.पू. बडे महाराजश्री तथा प.पू.ध.धु. आचार्यश्री १००८श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री तथा भावि आचार्य प.पू. १०८ श्री व्रजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा से तथा महंत स्वामी लक्ष्मीप्रसाददासजी एवं स्वा. बालकृष्णदासजी की प्रेरणा से चातुर्मास में सभा मंडप में दैनिक कथा शा. नित्यप्रकाशदास तथा शा. हरिचरणदास गुरु स्वा. वृन्दावनदासजीने कथामृतका सुंदर लाभ देकर सभी को संतुष्ट किया था। कथा की पूर्णाहुति मूली मंदिर के गोर श्री जतुभाईने विधिपूर्वक कराई थी। इस प्रसंग पर महंत स्वामी नरेन्द्रप्रसाददास तथा कोठारी स्वामी जयप्रकाशदासने सुंदर आयोजन किया था। - *मेहुल भगत*

सुरेन्द्रनगर मंदिरमें मूर्ति प्रतिष्ठा महोत्सव

मूलीधाम में विराजमान श्रीहरिकृष्ण महाराज की पूर्ण कृपा से प.पू. निवृत्त आचार्य महाराजश्री एवं व्रजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री तथा प.पू.ध.धु. आचार्यश्री १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के शुभाशीर्वाद से मूली श्री राधाकृष्णदेव देश के सुरेन्द्रनगर में नूतन भव्य कलात्मक ढंग से पांच शिखरवाला श्री स्वामिनारायण मंदिर तैयार हो गया है। जिसकी मूर्ति प्रतिष्ठा सं. २०६२ कार्तिक वद ता. १७-११-२००५ गुरुवार को सम्पन्न होगी। जिस में श्रीमद् सत्संगिजीवन सप्ताह पारायण ता. ११-११-२००५ से १७-११-२००५ तक होगा। इसके साथ श्रीहरियाग तथा सांस्कृतिक, धार्मिक, कार्यक्रम भी सम्पन्न होगा। इस प्रसंग का लाभ लेने हेतु सत्संग समाज को हार्दिक आमंत्रण है।

निमंत्रक

महंत स्वामी प्रेमजीवनदासजी

श्री स्वामिनारायण मंदिर जवाहर चौक

सुरेन्द्रनगर।

धांगधा नरसीपरा श्री स्वामिनारायण मंदिर में सुवर्ण कलश महोत्सव सम्पन्न

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा से तथा महंत स्वामी श्रीजीप्रकाशदासजी के शिष्य शा. घनश्यामजीवनदास तथा ट्रस्टी मंडल की प्रेरणा से सुवर्ण कलश पंचाब्दी महोत्सव ता. ५-८-२००५ से ११-८-२००५ तक धूमधाम से सम्पन्न किया गया था । इस प्रसंग के उपलक्ष्य में श्रीमद् भागवत सप्ताह पारायण शा. विवेकसागरदास तथा शा. वासुदेवचरणदास के वक्तापद पर सम्पन्न हुआ । सप्तदिनात्मक मंत्रजाप, रक्तदान शिबिर इत्यादि कार्यक्रम भी संपन्न हुआ ।

ता. १०-८-२००५ के दिन प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री पधारे थे, उस समय संत हरिभक्तोने उत्सव मनाकर स्वागत किया था । ता. ११-८-२००५ के दिन प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीने बाल स्वरूप घनश्याम महाराज का महाभिषेक वेदविधि से किया था ।

इसके बाद यज्ञ, अखंड धुनि, तथा पारायण की पूर्णाहुति भी स्व बरद हाथों से की थी ।

प्रासंगिक सभा में अहमदाबाद, मूली, जेतलपुर, वडताल, गढडा तथा अन्य महामंदिरो के संत महंत पधारे हुए थे । अंत में प.पू. आचार्य महाराजश्रीने सभाजन को आशीर्वाद दिया था ।

महोत्सव तथा पारायण के मुख्य यजमान प.भ. जयंतीभाई गोरधनभाई पटेल (न्युजर्सी) तथा प.भ. रसिकभाई गोरधनभाई पटेल (धरमपुर कडी) आचार्य महाराजश्री का आशीर्वाद प्राप्त किया था ।

- विवेकसागरदास अक्षरमहोल वाडी

सुरेन्द्रनगर श्री स्वामिनारायण मंदिर

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा महंत स्वा. प्रेमजीवनदासजी की प्रेरणा से मंदिर में आषाढ वद-२ से श्रावण वद-२ तक ठाकुरजी के सामने विविध अलंकरणो से अलंकृत करके ठाकुरजीके दर्शन का लाभ हरिभक्तों को दिया गया था । जिस में शा. प्रेमवल्लभदास तथा शा. सत्यस्वरूपदास के मार्ग दर्शन से श्री नरनारायणदेव युवक मंडल ने सुंदर सेवा का कार्य किया था ।

- शैलेन्द्रसिंह झाला

लींबडी तपोवन मंदिर

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से श्रावण मास में साधु भक्तवत्सलदासने श्रीमद् भागवत कथा का हरिभक्तों को रसपान कराया था ।

- घनश्याम मंडल

विदेश सत्संग वृत्तान्त

न्यूजर्सी कोलोनिया में नव निर्मित मंदिर में प्रतिष्ठा महोत्सव धूमधाम से सम्पन्न

अमेरिका के न्युजर्सी के कोलोनिया में I.S.S.O. संस्थापित श्री स्वामिनारायण मंदिर के निर्माण के लिए निवृत्त आचार्य महाराजश्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री एवं विद्यमान प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्रीने जो संकल्प किया था उस संकल्प को यहाँ की उत्साही जनता ने साथ सहकार देकर सर्वोपरि श्री स्वामिनारायण भगवान की कृपा तथा धर्मवंशी परिवार के आशीर्वाद से मंदिर के सुंदर जगह का संपादन हो गया तथा हरिभक्तों ने खूब निष्ठा पूर्वक सेवा करके देखते देखते ही नूतन भव्य मंदिर का निर्माण प्रारंभ किया । परिणाम स्वरूप मंदिर थोडे ही समय में बन गया ।

मंदिर तैयार होते ही प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से मूर्ति प्रतिष्ठा महोत्सव की ता. ४-९-२००५ रविवार को निश्चित कर दिया गया । इस प्रसंग पर त्रिदिनात्मक श्रीहरियाग तथा श्रीमद् भागवत सप्ताह पारायण २८-८-२००५ से ३-९-२००५ तक रखा गया था ।

२७ अगस्त को कृष्ण जन्मोत्सव रात्रि में ८ से १२ बजे तक मनाया गया था । ता. २८-८-०५ रविवार को ४-३० बजे पोथीयात्रा धूमधाम से निकाली गयी थी । ता. २९-८-२००५ को भागवत कथा के यजमान श्री भरतभाई तथा केतकी बहन शाह, श्रीमती हंसाबहन वी. पटेल, उपेन्द्रभाई, राजूला बहन शाह, अ.नि. हरिकृष्णभाई, गं.स्व. नीलबहन शाह, प्रवीणभाई, उषाबहन शाह, रोहितभाई, मंदाकिनी बहन, विपीनभाई, जौमनि बहन, मनुभाई, अनसूया बहन, जनार्दनभाई, इत्यादि ने पोथी पूजन, वक्तापूजन तथा आरती के बाद कथा श्रवण का लाभ लिया था ।

इस प्रसंग को सुशोभित करने के लिए अहमदाबाद से श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री, प.पू. लक्ष्मीस्वरूपा गादीवालाश्री म.पू. लालजी महाराजश्री तथा प.पू. श्रीराजा के साथ पधारे हुए थे । धर्मकुल परिवार के शुभागमन से संत हरिभक्तों के हृदय में अलौकिक आनंद समाया हुआ था ।

ता. २-९-२००५ के प्रातः काल आचार्य महाराजश्री के वरद हाथों से वेदोक्त विधि से श्रीहरियाग प्रारम्भ किया गया । वेद पुत्र श्री ईश्वरभाई शुक्लने आचार्यत्व किया ।

ता. ३-९-२००५ शनिवार २ से ४

तक शहर के राजमार्ग पर भव्य शोभायात्रा निकाली गयी । प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री, प.पू. लालजी महाराजश्री तथा संत अलंकृत सवारी में बैठकर सभी को दर्शन का सुख दे रहे ते । स्त्री-पुरुष इस दिव्य शोभायात्रा का दर्शन करके धन्यता का अनुभव कर रहे थे । इस शोभायात्रा में नंद संतो के बनाये गीत गाये जा रहे थे । श्री नरनारायणदेव श्री स्वामिनारायण भगवान तथा प.पू. आचार्य महाराजश्री के जयनाद से सारावातावरण अलौकिक हो रहा था । गोरे भी उस में भाग ले रहे थे । प.पू.अ.सौ. गादीवाला भी शोभायात्रा में (परदे के भीतर से) दर्शन देने पधारी थी । इससे बहनों में आनंद की सीमा ही नहीं थी । शोभायात्रा की शिष्टता देखकर वहाँ की पुलिस भी नत मस्तक हो गयी थी ।

युवा हरिभक्त नाना विधखेल दिखा रहे थे । लंडन तथा अमेरिका के श्री नरनारायणदेव युवक मंडल का तथा बालकों का उत्साह समा नहीं रहा था । यह ऐतिहासिक शोभायात्रा सायंकाल ४ बजे पूर्ण हुई थी ।

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री यजमान के साथ प्रवेश द्वार का विधिवत उद्घाटन करके मंदिर में पधारे थे । सभा में अतिथि विशेष महानुभाव, मेयरश्री, पुलिस विभाग के बडे पदाधिकारी इत्यादि आचार्य महाराजश्री का स्वागत किये । पू. महाराजश्री ने अपने आशीर्वाद में मेयरश्री, कोन्ट्राकटर तथा पुलिस आफिसरों की सेवा की प्रशंसा किया । सायंकाल कथा के समय रुक्मणी विवाह धूमधाम से सम्पन्न हुआ ।

ता. ३-९-२००५ की शाम को सभा हरिभक्तों के लिए अत्यंत आनंददायक थी । कारण यह कि अपने प.पू. निवृत्त आचार्य महाराजश्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री, पूज्या बडी गादीवाला तथा विद्यमान आचार्य महाराजश्री तथा पूज्य अ.सौ. गादीवाला, प.पू. लालजी महाराजश्री, पूज्य श्रीराजा, पूज्या बिन्दुराजा, तथा श्री प्रफुलकुमार, श्री सुव्रतकुमार, श्री सौम्यकुमार आदि धर्मवंशी परिवार की शुभ उपस्थिति एक साथ सभी को दर्शन के लाभ सिवाय कुछ था ही नहीं ।

ता. ४-९-२००५ को जिसके लिये बहुत समय से हरिभक्त प्रतिक्षा कर रहे थे उस कोलोनिया मंदिर में शुभ मूर्ति प्रतिष्ठा का समय आ गया । प्रात: ८-०० बजे प.पू. बडे महाराजश्री, वर्तमान आचार्य महाराजश्री, लालजी महाराजश्री मंदिर में प्रतिष्ठा करने हेतु पधारे थे । ठाकुरजी का पूजन अंगन्यास जब महाराजश्री कर रहे थे उस समय हजारों हरिभक्तों ने अपने जीवन में दर्शन की तृप्ति से धन्यता का अनुभव किया था ।

११-०० बजे पू. महाराजने यज्ञशाला में श्रीफल का हवन करके, आरती करके, ब्राह्मणो को दक्षिणा दी थी । श्रृंगार तथा अन्नकूट आरती करके सभा में विराजमान हुए । हरिभक्तों ने श्रीहरि के तीने अपर स्वरूपों की आरती पूजा करके आशीर्वाद प्राप्त किया था । पश्चात् महंत शास्त्री स्वामी निर्गुणदासजीने कोलोनिया के युवान हरिभक्तों की श्रद्धा भावना की प्रशंसा की ।

प.पू.ध.धु. आचार्यश्री १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजने अपने आशीर्वचन में वहाँ की श्रद्धालु हरिभक्तजनता की प्रेमलक्षणा भक्ति को देखकर खूब प्रशंसा किये ।

कथा के वक्ता श्री योगेन्द्रभाई भट्टने (पीजवाला) अपनी मधुर वाणी से श्रोताजन को रस से तरबोर कर दिया ।

मूर्ति प्रतिष्ठा प्रसंग पर शा.स्वा. सूर्यप्रकाशदासजी तथा पूजारी जयकृष्णदासजी एक मास तक सेवा किये थे । जेतलपुर से पू. शा.स्वा. पी.पी. स्वामी माधव स्वामी आकर सिंहासन इत्यादि कार्य में खूब सहयोग दिये थे ।

इसके अलावा शिकागो, डिट्रोईट, एल.ए., ह्युस्टन, फ्लोरिडा, बोस्टन, विहोकन मंदिर से शा. धर्मवल्लभदासजी, शा. स्वा. हरिकृष्णदासजी, देव स्वामी, हरिप्रिय स्वामी, पूर्णप्रकाश स्वामी, शा. केशवचरणदासजी, माधव स्वामी, हरिप्रकाश शास्त्री, ज्ञान स्वामी, घनश्यामप्रकाश इत्यादि संत पधारे थे । पू. महाराजश्री के साथ पार्षद वनराज भगत भी आये हुए थे ।

इस मूर्ति प्रतिष्ठा प्रसंग पर सभा संचालन पू. पी.पी. स्वामीने किया । I.S.S.O. के प्रत्येक चेप्टर से हरिभक्त अवकाश रखकर सेवा में भाग लिये थे । शिकागो के हरिभक्तों ने रसोई की सुंदर सेवा की थी ।

मूर्ति प्रतिष्ठा की विशेषता

- प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री नरनारायणदेव तथा घनश्याम महाराजको बांह में भरकर प्रतिष्ठित करके कोलोनिया में मोक्ष का द्वार खोल दिया ।
- मूर्ति प्रतिष्ठा के उपलक्ष्य में नि:शुल्क मेडिकल निदान केम्प का आयोजन करके २०० से भी अधिक रोगी का निदान किया गया ।
- एडिसन कोलोनिया में मूर्ति प्रतिष्ठा में सबसे अधिक हरिभक्तों ने लाभ लिया ।
- सबसे पहले विदेश की धरती पर (अहमदाबाद मंदिर सिवाय) श्री

नरनारायणदेव (वाधावाला) की प्रतिष्ठा की गयी । वह भी सुवर्ण के सिंहासन पर श्री नरनारायणदेव को विराजमान किया गया ।

एक साथ तीन श्रीहरि के अपर स्वरूपो ने मिलकर मूर्ति प्रतिष्ठा महाभिषेक किया ।

- शा. सूर्यप्रकाशदासजी

शिकागो श्री स्वामिनारायण मंदिर में धर्मकुल का आगमन

सर्वावतारी श्री स्वामिनारायण भगवानकी अति कृपा तथा महंत शा. स्वा. धर्मवल्लभदासजी तथा हरिभक्तों के आग्रह पर श्रीहरि के तीन अपर स्वरूपों ने संत हरिभक्तों को दिव्य सुख देने के लिए यहाँ पदार्पण किया था ।

धर्मकुल की महिमा स.गु. निष्कुलानंद स्वामीने पुरुषोत्तम प्रकाश में सुंदर रीति से गाया है ।

वचन द्वारे वस्या अमे एमां रे,
तमे फेर जाणशोमां तेमा रे ।
अमे एमा ए छे अम मांई रे,
एम समझो बाई भाई रे ॥

जिसकी सर्वोपरि महिमा अपने मुख से गाया है । उस में श्रीहरि के छठ्ठे, सातवें, आठवें वंशज इस प्रकार की श्रीहरि के तीनो अपर स्वरूपों का एक साथ प्रथमवार अलौकिक दिव्य दर्शन यहाँ के हरिभक्तों को हुआ ।

सर्व प्रथम मंदिर में प.पू. आचार्य महाराजश्री ठाकुरजीकी आरती उतारकर सभा में विराजमान हुए । संत हरिभक्तों ने तीनो अपर स्वरूपों की आरती उतारकर दर्शन करके आशीर्वाद प्राप्त किया था । जयनाद के साथ सभा प्रारंभ की गयी थी । बहनों की सभा में प.पूज्या अ.सौ. गादीवाला का पूजन अर्चन बहनोंने किया।

इस प्रसंग पर अहमदाबाद मंदिर के महंत शा.स्वा. निर्गुणदासजी, पू. पी.पी. स्वामी, शा.स्वा. हरिकृष्णदासजी, शा.स्वा. पूर्णप्रकाशदासजी, शा.स्वा. धर्मवल्लभदासजी, पूजारी हरिनंदनदासजी, प्रमुख श्री जगदीशभाई तथा विवेक ब्रह्मभट्टने प्रासंगिक प्रवचन किया ।

प.पू. बडे महाराजश्री का शुभ संकल्प श्री स्वामिनारायण म्युझियम के निर्माण में हरिभक्तों की सेवा करने की उत्कंठा तथा भावना पूर्ण हो गयी । प.पू. बडे महाराजश्री तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री ने अत्यन्त प्रसंन्न होकर सभाजन को हार्दिक आशीर्वाद दिया । धर्मकुल परिवार का दर्शन करके हरिभक्त खूब आनंद विभोर हो गये । आज सभी भक्तजन श्रीहरि के अपर तीन स्वरूपों के दर्शन की झंखना दूर हो गयी । श्रावण मास में पूजारी स्वामी हरिनंदनदासने भागवत दशम स्कंध की कथा करके सभी को आनंदित किया । जन्माष्टमी उत्सव भी धूमधाम से मनाया गया ।

- शनिकुमार जोशी

बुवी मेरीलेन्ड (वोशिंग्टन डी.सी I.S.S.O. चेप्टर)

२७ अगस्त शनिवार जन्माष्टमी के दिन सायंकाल ३ घंटे तक भजन-कीर्तन, भक्ति, वचनामृत वाचन, थाल, आरती तथा श्रीकृष्ण जन्मोत्सव सभी साथ मिलकर धूमधाम से मनाये । प.पू. आचार्य महाराजश्री की कृपा से सत्संग की प्रवृत्ति सुंदर चल रही है । - *कनुभाई एम. पटेल*

अक्षरनिवासी हरिभक्तों को भावपूर्वक श्रद्धांजलि

अहमदाबाद कालुप श्री स्वामिनारायण मंदिर के वयोवृद्ध पूज्य संत श्री पूजारी स्वामी नारायणप्रियदासजी गुरु स.गु. चितारा स्वामी बलदेवप्रसाददासजी ता. ६-९-०५ के दिन १०० वर्ष उम्र पूर्ण करके श्रीजी महाराज का अखंड स्मरण करते अक्षरनिवासी हुए है ।

मूली श्री स्वामिनारायण मंदिर के युवान संत स्वामी भक्तिप्रकाशदासजी गुरु स.गु. स्वामी प्रभुचरणदासजी ता. १५-९-२००५ के दिन श्रीजी महाराजका स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुए हैं ।

अहमदाबाद : श्री नरनारायणदेव के अनन्य निष्ठावान परम भगवदीय श्री विठ्ठलभाई सोमचंद्र शाह (एडवोकेट) ता. १३-९-०५ को श्रीजी महाराज का अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुए है । जिसने अक्षरनिवास से सत्संग समाज में बडी कमी हुई है । श्रीहरि उनको अपनी सेवा में सदा रखे ऐसी श्रीजी महाराज के चरणों मे प्रार्थना ।

धोलका श्री स्वामिनारायण मंदिर (बहनों का) यहाँ के मंदिर में सेवा पूजा करती हुइ सांख्ययोगी पू. माणेकबा ता. २१-९-२००५ की दिन श्रीजी महाराज का अखंड स्मरण करती हुइ अक्षरनिवासी हुई है ।

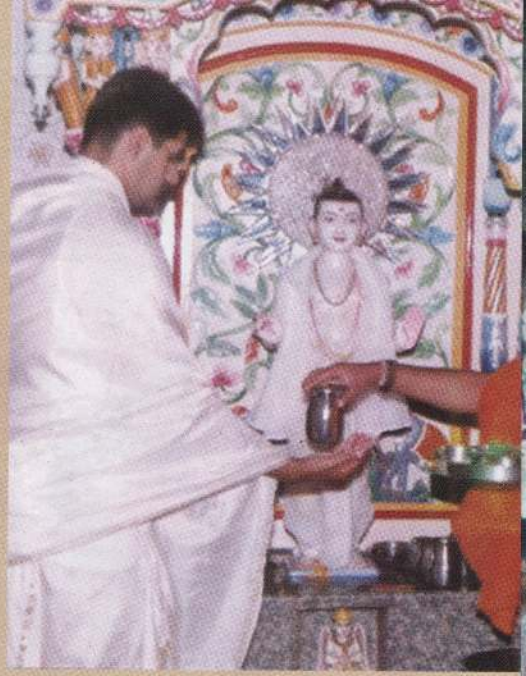
धांगध्रा : बाईयो के श्री स्वामिनारायण मंदिर में सेवा पूजा करती हुई सांख्ययोगी हेतलबा गुरु सांख्ययोगी गौरीबा ता. १८-९-०५ के दिन श्रीहरि का अखंड स्मरण करती हुई अक्षरनिवासी हुई है ।

सरसपुर-अमहदाबाद : प.भ. सूरदास विपिनभाई शाह जेठवद-१४ को श्रीहरि का स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुए हैं ।

बालासिनोर : प.भ. जयंतीभाई मूलजीभाई पटेलके छोटेभाई प.भ. राजुभाई मूलजीभाई पटेल ता. १९-९-०५ के दिन श्रीजी महाराज का अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुए है ।



नरसीपरा-ध्रांगध्रा मंदिर की सत्संग सभा में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की उपस्थिति में आशीर्वाद देते हुए प.पू. लालजी महाराजश्री ।



नरसीपरा-ध्रांगध्रा मंदिर में बाल स्वरूप घनश्याम महाराज का अभिषेक करते हुए प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री ।



ध्रांगध्रा के राजमार्गों पर शोभायात्रा में दर्शन देते हुए प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री ।



कोलोनिया मंदिर मूर्ति प्रतिष्ठा महोत्सव का सचित्र विवरण अमरिका के सुप्रसिद्ध वर्तमान पत्रों में प्रसिद्ध हुआ ।



शिकागो के नील मायर नास्तिक भौतिकवादी थे फिर भी मूल संप्रदाय के आश्रित सत्संगी के संग से जीवन परिवर्तन हुआ और दृढ आस्तिक हुए । शिकागो मंदिर में भावपूर्वक दर्शन करते हुए श्री मायर ।



अमरिका के कोलोनिया म संस्थापित भव्य शिखरबद्ध श्री स्वामिनारायण मंदिर (I.S.S.O.) । अमरिका का यह सर्व प्रथम मंदिर है जहाँ सर्वोपरि श्री नरनारायणदेव मूर्ति स्वरूप में विराजते हैं । श्री नरनारायणदेव की प्राण प्रतिष्ठा करते हुए श्रीजी महाराज के तीनो अपर स्वरूप ।



कोलोनिया की सभा में प.पू. तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की उपस्थिति में आशीर्वाद देते हुए प.पू.ध.धु. आचार्य श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री ।



aful Kharsani